‘मरुधर में जल स्वावलंबन’ परियोजना (अप्रेल 2018-मार्च 2024) यूरोपियन कमिशन द्वारा वित्त पोषित है। इसका उद्देश्य पश्चिमी राजस्थान के थार मरुप्रदेश में सामुदायिक कार्यवाही के द्वारा, खासकर महिला समूहों (जल सहेली समूह) तथा पंचायती राज संस्थाओं की सहभागिता से, जल सुरक्षा को बढ़ावा देना है।

जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में एक नाजुक कृषि-परिस्थितिकी में समुदाय की टिकाऊ क्षमता विकेन्द्रित शासन तथा सामुदायिक संगठनों के सक्रिय जुड़ाव से ही संभव है। सामुदायिक संगठन स्थानिक विश्लेषण से समुदाय द्वारा कार्यवाही जैसे शामलातों का जीर्णोद्धार तथा खेती में पानी के कार्यक्षम उपयोग इत्यादि को बढ़ावा दे, जिससे मरुस्थलीकरण का विस्तार अटके।

EUROPEAN UNION
Financial Support

उन्नति
UNNATI
Organisation for Development Education

हमारा जल हमारा प्रबंधन

मरुस्थल में जल सहेलियों की कहानियां

प्रकाशक – उन्नति
website : www.unnati.org

प्रथम संस्करण – 2024

EUROPEAN UNION

किताब के विकास एवं मुद्रण के लिए यूरोपियन यूनियन का विशेष आभार

उन्नति
UNNATI

''परंपरागत व्यवस्था में बदलाव करते हैं, मुश्किलें तो आती हैं। लेकिन मैं पीछे नहीं हटी। एक पखवाड़े में जानबूझ कर मेरा नाम मस्टररोल से हटा दिया। प्रधानमंत्री आवास की किस्तें रोक दी। जल सहेली ने पंचायत में सवाल उठाया कि अचकीदेवी का नाम क्यों हटाया। तब पंचायत ने तुरंत आवास का मस्टररोल जारी कर मुझे बताया कि आपका नाम नहीं हटाया। आपके आवास का मस्टररोल जारी किया है। मेरी ताकत जल सहेली हैं, उनसे हिम्मत मिलती है।''

अचकी देवी

नरेगा में मशीन के उपयोग का किया विरोध

बाड़मेर जिले (वर्तमान बालोतरा) के गांव चिड़ियारा की अचकी देवी के पति पत्थर खान में मजदूरी करते हैं। वे खुद खेती तथा महात्मा गांधी नरेगा में काम कर आजीविका चलाने में सहयोग करती हैं।

गांव में जल स्त्रोत के विकास एवं प्रबंधन व्यवस्था को मजबूत करने के लिए जल सहेली समूह में 50 महिलाएं जुड़ी हैं। अचकी देवी समूह का नेतृत्व करती है। गांव के तालाब को उपयोगी बनाने के लिए जल सहेलियों ने समुदाय की सहभागिता से नियोजन बनाया तथा ग्राम सभा में प्रस्ताव पारित करवा कर विकास प्लान में शामिल करने के लिए पंचायत को दिए। प्रस्तावों के अनुसार पानी आवक चैनल, पाल पत्थर पिचिंग, ऑवरफ्लो पर सुधार के कार्य ग्राम पंचायत द्वारा कराए गए। अब तालाब में सालभर पानी रहता है। हर परिवार को रुपए 5000-6000 फायदा होता है क्यों कि महंगा पानी खरीदना नहीं पड़ता।

अचकी देवी बताती हैं कि कोविड-19 लॉक डाउन में सभी को रोजगार की जरुरत थी। वे 30-35 महिलाओं को साथ लेकर महात्मा गांधी नरेगा में रोजगार के लिए आवेदन कराने गई, तो ग्राम विकास अधिकारी ने यह कहते हुए आवेदन लेने से इन्कार कर दिया कि काम स्वीकृत नहीं है। महिलाओं को लेकर ब्लॉक विकास अधिकारी को अवगत कराते हुए आवेदन लेने व रोजगार उपलब्ध कराने की मांग की।

वापस गांव आई, तो देखा कि तालाब पर जेसीबी मशीन से चैनल खुदाई का कार्य हो रहा था। जल सहेलियों को फोन व सूचना देकर एकत्रित किया तथा उनको लेकर जेसीबी के आगे खड़ी हो गई। काम रुकवा दिया। गांव के निर्णायक लोग जेसीबी से कार्य कराने की पैरवी करने आए, तो अचकी देवी ने कहा, ''हमें तो काम नहीं दिया जा रहा है, दूसरी तरफ जेसीबी से कार्य कराया जा रहा है। जल सहेलियों ने तय किया कि कोई भी काम मशीन से नहीं होने देंगे।''

''दबाव बनने पर ग्राम पंचायत ने मस्टररोल जारी किया लेकिन किसी को सूचना नहीं दी। काम पर नहीं पहुंचने पर मेट ने सभी की गैरहाजरी लगा दी। मुझे सूचना मिली, मैंने महिलाओं को काम पर जाने के लिए तैयार किया। महिलाएं जाने के लिए तैयार नहीं थी। उनका कहना था कि हमें तीन किलोमीटर दूर काम दिया गया है, गांव के तालाब पर काम करेंगी। महिलाओं को समझाया कि अगर मस्टररोल खाली जमा हुआ तो, पंचायत यह लिख देगी कि महिलाओं को रोजगार की जरुरत नहीं है। इस लिए इस पखवाड़े काम करना जरुरी है। दूसरे दिन 100 से अधिक महिलाओं को लेकर कार्यस्थल पर गई तथा सभी को काम पर लगवाया। पंचायत ने यह सोच कर कि महिलाओं को काम मिल गया, अब विरोध नहीं होगा, जेसीबी से फिर कार्य चालू करा दिया। मुझे कार्यस्थल पर सूचना मिली। सभी महिलाओं को बताया, तो सभी ने कहा, हमें चलकर काम रुकवाना चाहिए। दूसरी बार जेसीबी का कार्य रुकवाया तथा ऑपरेटर को बताया कि अगली बार तालाब पर जेसीबी लेकर आया, तो खैर नहीं होगी। जेसीबी ऑपरेटर हाथाजोड़ी करके गया तथा उसके बाद जेसीबी से कार्य नहीं हुआ।''

''तालाब के चैनल को पक्का कराने का कार्य गुणवत्ता से नहीं हो रहा था। जल सहेली को साथ लेकर कार्य देखा। सीमेंट बहुत कम डाली जा रही थी। हाथ से उखड़ रही थी। मैने काम रुकवा दिया। ब्लॉक विकास अधिकारी को जांच कराने एवं गुणवत्तायुक्त काम कराने की मांग की। पंचायत में सार्वजनिक सभी कार्यो की निगरानी करती हूं। समय-समय पर अवाज उठाते रहने से कार्यो में सुधार हुआ है। आवाज उठाने में जल सहेलियां मेरे साथ होती हैं। गरीब के लिए काम करने से गांव में मेरी पहचान बनी है और लोग कामों में मेरी सलाह लेने लगे हैं।''

“जो काम पिछले तीस सालों में नहीं हुआ, जल सहेलियों के सहयोग से हिम्मत आई तथा हल करने की पहल शुरू हुई। पहले तालाब एक माह में खाली कर देते थे, इस बार छः माह तक पानी रहा। यह प्रयास जारी रखेंगे। थोड़ी ढील दे दी, तो टेंकर फिर से चालू हो जाएंगे।’’

भानुदेवी

पानी बचाने के लिए प्रभावशाली रिसोर्ट वालों से टक्कर ली

जैसलमेर सम गांव की भानुदेवी ने तालाब से रिसोर्ट वालों को पानी टेंकर भरने पर रोक लगाने का बीड़ा उठाया। सम गांव पर्यटन कैमल सफारी के लिए प्रसिद्ध है। बीस-पच्चीस वर्षो में बहुत से रिसोर्ट बन गए। रिसोर्ट वाले सम सहित नजदीक के गांवों के जल स्त्रोतों से पानी टेंकर भर लेते हैं, जिससे गांव के लोगों को पानी के संकट का सामना करना पड़ता है। समुदाय बैठक में लोगों ने बताया कि रिसोर्ट वाले प्रभावशाली हैं। कुछ समय पहले गांव वालों ने टेंकर वालों को रोका तो झगड़ा हो गया था। रिसोर्ट वालों ने दो-तीन युवकों को पीट दिया था। थाने में रिपोर्ट भी कराई लेकिन कार्यवाही नहीं हुई। उसके बाद टेंकर वालों को रोकने की किसी की हिम्मत नहीं हुई।

भानुदेवी ने बताया कि ‘‘सम में मेघवाल समुदाय का अलग तालाब था। साल भर पानी मिलता था। गांव के अन्य तालाब खत्म हो गए। रिसोर्ट तथा होटलों, दुकानों वालों ने अतिक्रमण कर लिया। हमारा ही एक तालाब बचा हुआ था। रिसोर्ट खुलने के बाद एक महीने में टेंकरों से तालाब को खाली कर देते हैं। उन्नति द्वारा गांव में बैठक कर जल सहेली संगठन का गठन किया गया। हरेक बैठक में चर्चा के दौरान एक ही मुद्दा सामने आता कि जब तक रिसोर्ट के टेंकर भरने बंद नहीं होंगे, रिवाइवल व प्रबंधन की बात करने का कोई औचित्य नहीं है।’’

‘‘जल सहेली को साथ लेकर ग्राम पंचायत, ग्राम सभा एवं प्रशासन गांव के संग अभियान में मुद्दा रखा। ग्राम पंचायत ने भरोसा दिलाया। लेकिन मुझे समझ आ गया कि जब तक हम संगठित होकर प्रयास नहीं करेंगे, तब तक स्थाई समाधान नहीं होगा।’’

‘‘मैंने जल सहेलियों, गांव के युवाओं को तैयार किया। निर्णय लिया कि इस बार वर्षा होने के बाद संगठित होकर रिसोर्ट वाले टेंकरों को रोकना है। तालाब में पानी भरने के बाद सघन निगरानी शुरु की। नाडी के आस-पास घरों वालों को बताया कि रिसोर्ट का टेंकर आने पर हमें तुरंत सूचना करना। शुरु में परेशानी आई। झगड़ा होने तक की नौबत आई, लेकिन हमने मुकाबला कर टेंकर भरने नहीं दिया। इसकी गांव में चर्चा हुई तथा जो लोग डर या दबाव के कारण हमारे साथ नहीं जुड़े थे, वो भी सहयोग में आ गए। आगे का नियोजन है कि रिसोर्ट यूनियन के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर सहयोग मांगेंगी। पंचायत व ग्राम सभा में मुद्दा रखती रहेंगी। तालाब जीर्णोद्धार का प्रस्ताव पंचायत में देंगी।’’

"महिलाएं अपने मुद्दों व उनके समाधान की गहरी समझ रखती है। जानकारी दें व सही तरीके से समझाएं तो महिलाएं जुड़ती हैं। ग्राम सभा में विकास संबंधी मुद्दों को रखती हैं, तो कार्य होते हैं। मैं इस प्रयास को जारी रखूंगी तथा बदलाव आएगा।"

भंवरी देवी

ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई

बागोड़ा के खोखा गांव की निवासी भवंरी देवी ने 27 महिलाओं को जोड़कर जल सहेली समूह बनाया। इनको लगा कि जल स्त्रोतों व गांव के विकास के लिए ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी जरूरी है।

वे बताती हैं, सितंबर 20, 2023 को बागोड़ा में जल सहेली लीडर्स की बैठक में 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी नरेगा के प्लान के अनुमोदन को लेकर होने वाली ग्राम सभा में जल सहेलियों द्वारा प्रस्ताव देने का नियोजन हुआ। समुदाय की सहभागिता से गांव के मुख्य जल स्त्रोत विकास के प्रस्ताव तैयार किए। ग्राम सभा से दो दिन पूर्व भवंरी देवी ने घर-घर जाकर महिलाओं को ग्राम सभा में चलने के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप पहली बार ग्राम सभा में 112 महिलाओं की भागीदारी रही। मॉडल तालाब बनाने के अतिरिक्त 'अपना खेत अपना काम' के 42 प्रस्ताव पारित कराए। सरपंच व ग्राम विकास अधिकारी ने भवंरी देवी के इस कार्य की सराहना की।

नवंबर 14, 2023 को विशेष ग्राम सभा की जानकारी मिलने पर भवंरी देवी ने फिर घर-घर जाकर लोगों को तैयार किया तथा 100 से अधिक महिलाओं को साथ लेकर गई। भवंरी देवी ने बताया कि उन्हें ग्राम सभा में बोलने का मौका दिया, तो उन्होंने जल सहेली के कार्यो के बारे में बताया।

''ग्राम पंचायत की बैठकों में जाने से लेकर ब्लॉक स्तर के कार्यक्रमों में भाग लेती हूं और अपने गांव के मुद्दों को उठाती हूं जो कि मेरे लिए गर्व की बात है।''

छगनी देवी टाक

वर्षा जल संग्रहण के लिये जिले में सम्मानित

गांव की महिलाओं को वर्षा जल संग्रहण के लिए प्रेरित कर सरकारी योजना से जुड़ाव कराने एवं गांव के जल स्त्रोत को उपयोगी बनाए रखने के प्रयासों के लिए विश्व जल दिवस के अवसर पर बाडमेर जिला कलेक्टर द्वारा गांव टाकों की ढाणी की छगनी देवी टाक का सम्मानित किया जाना बड़ी बात है। छगनी देवी कहती हैं, ''यह मेरे लिए गर्व और गांव के लिए सम्मान की बात है।''

पढे-लिखे परिवार से तालुक रखने वाली छगनी देवी 12 वीं पास हैं। छगनी देवी कहती हैं ''शिक्षा जारी रखने का अवसर ससुराल में भी मिला। घरेलु कार्य के अतिरिक्त खेती व सिलाई का कार्य कर परिवार की आय में योगदान करती हूं। सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेती हूं। जल स्त्रोतों के विकास एवं प्रबंधन को लेकर जल सहेली गठन हेतु उन्नति द्वारा रखी गई बैठक में गांव वालों ने एकमत होकर जल सहेली लीडर के रुप में मेरा चयन किया।''

छगनी देवी कहती हैं, ''बैठकों में जुड़ने के बाद मुझे सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, प्रावधानों और वंचितों का जुड़ाव कराने की प्रकिया की जानकारी मिली। गांव स्तर पर हर माह होने वाली जल सहेली व समुदाय बैठकों में लोगों के मुद्दों की पहचान करती हूं और समाधान के लिए सहयोग देती हूं। उन्नति द्वारा समय-समय पर योजनाओं के आवेदन और प्रकिया, नए आदेशों की जानकारी मिलने से आत्मविश्वास बढ़ा। सेवाओं में सुधार हेतु सेवाप्रदाताओं के साथ बेझिझक बात करती हूं।''

अपने कार्य के अनुभव बताते हुए छगनी देवी कहती हैं, ''गांव में पीने का पानी नीरिया नाडी से मिलता है। गांव में रहने वाले करीब 150 परिवार आज भी नाडी पर निर्भर हैं। मैं पिछले आठ वर्षो से निरिया नाडी के विकास एवं प्रबन्धन व्यवस्था बनाने का प्रयास कर रही हूं। नाडी की साफ-सफाई के लिए ग्याहरस व पूर्णिमा को श्रमदान करना चालू कराया है। जीर्णोद्धार के लिए कार्यो के प्रस्ताव तैयार कर जल सहेली की सहभागिता से ग्राम पंचायत विकास प्लान में डलवाए, तथा कार्य करवाए।''

''बैठकों व घर संपर्क कर गांव की महिलाओं को नाडी की उपयोगिता व महत्व को समझाने का काम करती हूं। उन्हें बताती हूं कि आने वाले समय में पानी का संकट होगा। घर में लगे नल तथा ट्यूबवेल के पानी की कोई गारन्टी नही है। गांव की नाडी ही एक ऐसा स्त्रोत है जिसमें हमेशा पानी रहेगा।''

छगनी देवी कहती हैं कि पति के सहयोग और संस्था के मार्गदर्शन से आज वे यह महसूस करती हैं कि गांव में अन्य महिलाओं से ज्यादा जानकारी ले सकी हैं और बाहर जाने का अवसर मिलने से सीख और सोच का दायरा बढ़ा है।

“उन्नति के सहयोग से जल सहेली के साथ जुडने के बाद मुझे गर्व महसूस होता है। मुझ में हिम्मत आई कि बाहर के काम भी कर सकती हूं। लोगों की भलाई का अवसर मिला है।”

चौथी देवी

आगौर से अतिक्रमण हटाया

नाकोड़ा की चौथी देवी जल सहेली समूह को लेकर पहली बार ग्राम पंचायत में गई तथा सरपंच द्वारा प्रस्ताव लेने से इन्कार करने पर अड़ गई। अंत में सरपंच को प्रस्ताव लेना पड़ा। चौथी देवी जल सहेली लीडर हैं। वे बताती हैं कि ''पहले घर या खेत तक ही सीमित थी। पहले कभी पंचायत नहीं देखी और न ही किसी बैठक में भाग लिया। अवसर मिला, तो सार्वजनिक कामों में जुड़ गई।''

जल सहेली के रुप में जुड़ने, और लगातार बैठक में भागीदारी से मेरी समझ बनी कि संगठन बनाकर अच्छे काम किए जा सकते हैं। जल सहेली समूह की महिलाओं को भी बैठक में साथ लेकर आती। बैठक में कोई भी बात करते उसको ध्यान से सुनती। यह सब गुण देखकर जल सहेलियों ने मुझे लीडर बनाया। जल स्त्रोतों से जुड़ाव बढ़ा और समझ आया कि इनको उपयोगी बनाना जरुरी है।

बूठली नाडी के आगौर के कुछ हिस्से पर पास के खेतों वालों ने तारबंदी कर अतिक्रमण कर लिया था। मैंने प्रशासन गांव के संग अभियान में जल सहेली के सहयोग से सीमाज्ञान का प्रस्ताव दिया। पटवारी ने सीमाज्ञान किया तो आगौर की जमीन पर तारबंदी की हुई थी। गांव के लोग शामिल थे। तारबंदी को हटवा कर आगौर को अतिक्रमण मुक्त कराया।

बूठली नाडी पर पिछले 15 वर्षो में जीर्णोद्धार का काम नहीं हुआ। समुदाय बैठक की तथा प्रस्ताव तैयार किए। जल सहेलियों को साथ लेकर ग्राम पंचायत में गई। इससे पहले महिलाएं ग्राम पंचायत में नहीं गई थीं। सरपंच ने प्रस्ताव लेने से मना कर दिया। सरपंच ने कहा कि यह प्रस्ताव पहले भेज चुके हैं। तब मैंने कहा, प्रस्ताव दिया हुआ है, तो काम चालू क्यों नहीं हुआ। सरपंच के साथ काफी बहसबाजी हुई। मैंने कहा आप प्रस्ताव नहीं लेंगे, तो हम बी.डी.ओ. के पास जाएंगी, वहां प्रस्ताव देगी। तब सरपंच ने प्रस्ताव लिए तथा रजिस्टर में दर्ज किए। मेरे साथ गई महिलाओं ने कहा कि आपकी वजह से हम पंचायत देख पाई हैं। पहले हमें पता नहीं था, पंचायत कैसी होती है और क्या काम करती है।

महात्मा गांधी नरेगा में हमारी ढाणी के लोगों को काम नहीं मिला। टांकों पर कुछ लोगों के नाम लिखे गए थे। सौ से ज्यादा महिलाओं को लेकर पंचायत गई तथा काम की मांग की। बूठली नाडी पर काम स्वीकृत नहीं था, पास के रतानाडा पर 100 लोगों को काम मिला।

हमारी ढाणी में दो सौ दलित परिवार रहते हैं तथा बूठली नाडी पर निर्भर हैं। पंचायत से काम स्वीकृत नहीं हुआ, तो जल सहेलियों ने उन्नति को नाडी जीर्णोद्धार का प्रस्ताव दिया। उन्नति के सहयोग से नाडी की खुदाई, आगौर समतलीकरण व पाल ठीक कराने का काम किया। इस साल काफी मात्रा में पानी एकत्रित हुआ। दो महीने का अतिरिक्त पानी मिला।

इस गांव में बरसात का पानी कोई इकट्ठा नहीं करता था। मैंने अपने घर पर बरसात का पानी एकत्रित करने के लिए टांके का छत से कनैक्शन किया। फिर लोगों को समझाया कि बरसात का पानी इकट्ठा करने से पानी कम खरीदना पड़ेगा व पैसों की बचत होगी। मेरे समझाने पर 12 परिवारों ने टांकों का छत से जुड़ाव कराया।

“ग्राम पंचायत में छोटे–मोटे काम के लिए मुझे बुलाते हैं तथा राय लेते हैं। गांव में कोई भी मुद्दा आता है तो लोग मुझे बुलाते हैं और समाधान पूछते हैं। गांव में मेरे काम व नाम की धाक है। मेरी एक आवाज में महिलाएं एकत्रित हो जाती हैं।”

देवी भील

गांव उनके नेतृत्व का कायल है

बालोतरा जिले के साजियाली पदमसिंह गांव की रहने वाली देवी भील की आजीविका का मुख्य श्रोत खेती तथा पशुपालन है। वे माहत्मा गांधी नरेगा मे भी मजदूरी करती हैं। इनके पति चेतनराम गांव में दिहाड़ी मजदूरी करते हैं। वे पिछले 12 साल से गांव में पानी के प्रबन्धन को लेकर कार्य कर रही हैं। जल सहेली समूह में 35 महिलाओं को जोड़ा है, जिसमें हर वर्ग का प्रतिनिधित्व है। पिछले चार सालों में उनके नेतृत्व में गांव की चार नाडियों वाकल, लोंकेरा, रुद्रणा तथा नवोड़ी नाडी पर नौ सामुदायिक बैठकें कर विकास का नियोजन किया और ग्राम पंचायत को प्रस्ताव सौंपे। महात्मा गांधी नरेगा में स्वीकृत हुए और झाड़ियों को साफ करवाया गया, गाद निकाली गई तथा सुरक्षा दीवार का निर्माण हुआ। हर कार्य के दौरान गुणवत्ता की निगरानी की। पिछले साल नाडी पर कार्य के दौरान पीने के पानी की व्यवस्था नहीं थी तो ग्राम पंचायत में जाकर ग्राम विकास अधिकारी को अवगत करवाया और पानी की व्यवस्था करवाई।

‘अपना खेत अपना काम’ योजना में 30 परिवारों को टांका निर्माण में सहयोग किया। इन परिवारों को पानी की दिक्कत नहीं होती और प्रति परिवार सालाना 10 हजार रुपए से अधिक की बचत होने लगी है। गांव में दो बेरियों की मरम्मत करवाई और उन पर हैंडपंप लगवाया। महात्मा गांधी नरेगा में श्रमिकों को काम नहीं मिलने पर देवी ने 80 लोगों के मांग-पत्र भरवा कर रसीद दिलवाई। फलस्वरुप 60 लोग 100 दिन का पूरा रोजगार पा सके और श्रमिक विभाग की योजनाओं के लाभ से जुड़ पाए।

गांव में नौ महिला स्वयं सहायता समूह भी बने हैं (राजीविका में) जिसमें 125 महिलाएं हैं। देवी विलेज ऑर्गेनाइजेशन की अध्यक्षता करती हैं। देवी ने बताया कि लोगों को समुदाय बैठकों में जोड़ने, नाडियों पर श्रमदान के लिए वे घर-घर जाकर न्यौता में पीले चावल देती हैं और हमेशा ही नाडी को घर के पानी के पलिंडे की तरह सहेजने का संदेश देती हैं।

फरवरी 2022 में उनके गांव में बने जीएलआर में पानी नहीं आता था। उन्होंने सरकार के टोल-फ्री नंबर 181 पर शिकायत दर्ज करवाई और संबंधित अधिकारी से बात की। चार-पांच दिन बाद पानी आ गया व नियमित आ रहा है।

पहले नाडी में पानी कम रुकता था। नाडी का पानी खत्म होने पर उसमें बनी बेरीयों के पानी का उपयोग करते थे। कुछ समय बाद बेरीयों का पानी भी खत्म होने लगता था। बेरीयों से पानी भरने के लिए महिलाओं को इन्तजार भी करना पड़ता था। देवी बताती हैं कि वे खुद पहले पानी का टेंकर पाटोदी से मंगवाती थीं। एक तो वह समय पर नहीं आता था और पानी खरीदने में साल के रु. 15000 खर्च हो जाते थे। आज इन पैसों की बचत है, इन्तजार नहीं करना पड़ता। नाडी में पानी होने से पशु-पक्षियों को पानी मिलता है। आस पास का वातावरण ठीक रहता है।

"जल सहेली, समुदाय और ग्राम पंचायत तालमेल बनाकर कार्य करने की ठान ले, तो कोई काम मुश्किल नहीं है।"

दुर्गा देवी

श्रमदान की परम्परा को पुनर्जीवित किया

बाप ब्लॉक के कल्याण सिंह की सिड निवासी 63 वर्षीय दुर्गादेवी ने पारंपरिक जल स्त्रोतों को श्रमदान से उपयोगी बनाने एवं प्रबंधन व्यवस्था को मजबूत करने का उल्लेखनीय एवं प्रेरणादायी कार्य किया है। वे बताती हैं कि पिछले 15-20 सालों से श्रमदान की परंपरा खत्म हो गई थी। पूर्व में जल स्त्रोतों के प्रबंधन के लिए ठोस नियम तथा लोगों द्वारा पालना होती थी। पाइप लाइन से पानी सप्लाई होने के बाद लोगों ने जल स्त्रोतों की तरफ ध्यान देना बंद कर दिया। जल स्त्रोतों की स्थिति बिगड़ गई। उन्नति द्वारा जल स्त्रोतों को उपयोगी एवं समुदाय द्वारा प्रबंधन व्यवस्था बनाने के लिए की गई बैठकों से जल स्त्रोतों की उपयोगिता पर समझ बनी। यह कार्य करने की पहल के लिए गांव में जल सहेली समूह बनाया जिसमें वे भी जुड़ीं। जल स्त्रोतों का जीर्णोद्धार एवं प्रबंधन व्यवस्था स्थापित करने की कार्यवाही में अगुवाई करने लगीं।

वे बताती हैं, सर्वप्रथम मोडकिया नाडी पर समुदाय बैठक कर श्रमदान को फिर से चालू करने का निर्णय लिया ताकि लोगों का जुड़ाव बढ़े। बैठक के दूसरे दिन सभी को श्रमदान के लिए आमंत्रित किया। 25 महिलाओं ने दो घंटे श्रमदान कर विलायती बबूल की झाड़ियां काटी, प्लास्टिक व कचरा साफ किया। निर्जला एकादसी के अवसर पर सदोलाई नाडी पर श्रमदान का नियोजन किया। जल सहेली सदस्यों को घर-घर सूचना देने की जिम्मेदारी दी। 200 महिलाओं ने सदोलाई नाडी पर श्रमदान किया। प्रत्येक पूर्णिमा को श्रमदान का निर्णय लिया। यह व्यवस्था स्थाई हो गई। अब महिलाएं श्रमदान के लिए अपने आप आने लगी हैं। नई पीढ़ी के युवक-युवतियों को भी जोड़ा गया ताकि आने वाले समय में वो इस व्यवस्था को सुचारु चला सकें। जल स्त्रोतों से पंचायत व लोगों का लगाव हुआ है तथा सकारात्मक वातावरण बना है।

गांव की प्रमुख सढ़ोलाई नाडी पर समुदाय की सहभागिता से विकास कार्यों की पहचान कर प्रस्ताव तैयार किए तथा जल सहेली द्वारा 2 अक्टूबर की ग्राम सभा में अनुमोदन करवा कर पंचायत के रजिस्टर में लिखवाए। कार्य स्वीकृत हुए तथा नाडी भराव क्षेत्र से मिट्टी निकालने, आगौर समतलीकरण, सफाई, घाट व पाल निर्माण कार्य हुए। नाडी का स्वरुप बदल गया। इसके अतिरिक्त अन्य तीन नाडियों पर भी जीर्णोद्धार के कार्य करवाए। मुख्य नाडी की भराव क्षमता बढ़ गई। अब पूरी भरती है, तो तीन साल पानी खत्म नहीं होगा।

सढ़ोलाई सहित अन्य जल स्त्रोतों के प्रबंधन के नियम बनाए। सोलर कंपनियों द्वारा जल स्त्रोतों से पानी उठाने पर रोक लगाई। साफ-सफाई एवं पाल-घाट पर शराब पीने पर पाबंदी लगाई। जल सहेली सदस्यों को अलग-अलग नाडियों की निगरानी की जिम्मेदारी दी गई है। वे समय-समय पर जाकर निगरनी करती हैं। समुदाय व ग्राम पंचायत की संयुक्त मीटिंग में नियमों को पारित करवाकर मुख्य जल स्त्रोत पर बोर्ड लगाकर नियमों को सार्वजनिक किया। पिछले 10-15 सालों से लोग नाडी के पानी का उपयोग नहीं करते थे। जीर्णोद्धार एवं प्रबंधन व्यवस्था बनने के बाद उपयोग करने लगे हैं।

''जल स्त्रेतों को लेकर बनी समझ से आगे का रास्ता मिल गया। इस कार्य को नियमित जारी रखूंगी।''

गीता देवी

मेट की भूमिका बेहतर निभाती है

बारहवीं पास 36 वर्षीय गीता देवी गांव कावतरा की निवासी हैं। वर्ष 2009 से महात्मा गांधी नरेगा में मेट का कार्य कर रही हैं। वे बताती हैं, ''उन्नति द्वारा अगस्त 2021 में नाडी पर जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार एवं प्रबंधन को लेकर हुई बैठक में जल सहेली समूह का गठन हुआ। 30 महिलाएं स्वेच्छा से जुड़ीं तथा मुझे जल सहेली लीडर चुना। मैं प्रत्येक बैठक में जुड़ती हूं तथा अन्य सदस्यों को भी सूचना देकर बुलाती हूं। बैठकों में जुड़ने से जल स्त्रोतों के महत्व की समझ बनी। महिलाओं को बताती हूं कि अधिक दोहन के कारण गांव का भू-जल गहराई में चला गया तथा खारा हो गया। जल स्त्रोतों को ठीक नहीं किया तो पानी का संकट होगा।'' गीता देवी बताती हैं, ''मेट के कार्य में ग्राम विकास अधिकारी व इंजिनियर द्वारा बताया गया काम ही करवाती थी। जब से जल सहेली समूह में जुड़ी, नाडी के विकास संबंधी कार्यो की पहचान कर प्रस्ताव तैयार किए तथा ग्राम पंचायत में देकर पावती ली। जल सहेली को लेकर कई बार पंचायत में गई तथा दिए हुए प्रस्तावों के बारे में पूछ-ताछ की। गांव की चार नाडियां ठीक हुई। नाडी पर काम के दौरान मजदूरों को समझा कर पूरा काम कराने के लिए प्रेरित करती हूं। यह काम मुझे अच्छा लगता है।''

''श्रमदान की परंपरा काफी समय से बंद थी। जल सहेली के सहयोग से गांव की अन्य महिलाओं को जोड़कर पांच बार श्रमदान किया। बैठकों में जुड़ने से पानी बचाने व नाडी को ठीक करने की समझ बनी। नाडी पर हमारे बताए अनुसार काम हुए, जो पहले नहीं होते थे। ग्यारस व पूर्णिमा को नियमित श्रमदान होने लगा। जल स्त्रोत प्रबंधन के नियम बनाए तथा गांव की बैठकों में पारित कर पालना कराने का प्रयास कर रही हूं। महिलाएं जल स्त्रोतों के विकास व अन्य मुद्दों को लेकर ग्राम पंचायत में जाने लगी, यह बड़ा बदलाव हुआ है।''

"उन्नति ने हमारी समझ बनाई है, समाधान के तरीके बताए हैं, अब इस कार्य को जारी रखूंगी तथा दूसरी बहनों को भी अगुवाई करने के लिए तैयार करूंगी।"

गीता कंवर

टेंकर से पानी भरने को नियन्त्रित किया

जैसलमेर के दामोदरा गांव की गीता कंवर ने पंद्रह महिलाओं को जोड़कर जल सहेली समूह बनाया। आज समूह में तीस सदस्य जुड़ गई। वैसे तो गांव में छोटे-बड़े कई जल स्त्रोत हैं, लेकिन मुख्य जेठेरी तालाब है। जेठेरी तालाब में पानी समाप्त होने के बाद पार में बनी बेरियों से पानी लाते थे। जेठेरी तालाब का जीर्णोद्धार कराने, प्रबंधन व्यवस्था स्थापित करने का काम किया।

गीता जी बताती हैं कि मेरी शादी हुई तब से आज तक तालाब के पानी पर निर्भर हैं। पहले मटकों से पानी लाती थीं, अब टेंकर से मंगवाते हैं। तालाब का निर्माण पूवर्जो ने कराया था एवं मजबूत प्रबंधन व्यवस्था थी, नियम बने हुए थे। प्रबंधन व्यवस्था भंग करने वालों को तालाब की मिट्टी निकालने, आगौर साफ कराने जैसे दंड का प्रावधान था। समय के साथ कई चीजें बदलीं। पाइप लाइन द्वारा पानी की सप्लाई आने से लोगों के लिए तालाब महत्वहीन हो गया। टेंकर से पानी मंगवाने की व्यवस्था के बाद महिलाओं का तालाब पर आवागमन बंद हो गया। तालाब की तरफ से सभी का ध्यान हट गया। जेठेरी तालाब में पानी खत्म होता है, तो डेढ़ा गांव के जसेरी तालाब से टेंकर मंगवा लेते हैं। मिट्टी आने से तालाब की भराव क्षमता घट गई। टेंकर वाले पानी उठाकर बेचने लगे। पाइप लाइन पानी सप्लाई की अनियमितता एवं आवश्यकता अनुसार पानी नहीं मिलने के कारण गांव में पानी का संकट रहने लगा। गांव के तालाब में पानी समाप्त होने पर दूसरे गांव से मंगवाने लगे जिससे पैसा अधिक देना पड़ता। लेकिन तालाब को उपयोगी बनाने की पहल पर किसी ने विचार नहीं किया।

दो वर्ष पूर्व उन्नति ने तालाबों की उपयोगिता, विकास एवं प्रबंधन को लेकर गांव में बैठकें शुरु की। चर्चाओं से समझ आया कि यही उचित समय है, तालाबों को फिर से ठीक करने का। जल सहेली संगठन बनाया, तालाब व आगौर का विजिट किया। सुधार के लिए कार्यो की पहचान कर प्रस्ताव तैयार कर पंचायत को दिए। काम की स्वीकृति आने पर तालाब से मिट्टी निकालने, आवक चैनल व नेस्टा निर्माण कराया। अमावस्या व पूर्णिमा को श्रमदान चालू किया। इससे तालाब व आगौर साफ-सुथरा रहता है, साथ में निगरानी भी होती है।

जल सहेली की बैठकें तालाब पर करने लगे जिससे तालाब की निगरानी होने लगी तथा जल सहेली की पहचान व मान्यता बढ़ने लगी। प्रबंधन व्यवस्था में कुछ पुराने नियमों को रखते हुए गांव के बाहर टेंकर से पानी ले जाने पर रोक का नया नियम जोड़ा। पंचायत में आमसभा बुलाने के लिए जल सहेलियों ने संपर्क कर गांव वालों को सूचित किया। आमसभा में नियमों को पढ़ कर सुनाया तथा सर्वसम्मति से पारित कराया। दूसरे गांव के टेंकर भरने की पाबंदी पर गांव व पंचायत से सहयोग मांगा। सभी ने कहा कि किसी प्रकार की आपातस्थिति में पानी की जरुरत होती है, तो पंचायत से स्वीकृति लेकर एक-दो टेंकर भराए जा सकेंगे। पंचायत टेंकर वाले को पर्ची देगी। टेंकर वाला पर्ची जल सहेली लीडर गीता देवी को देगा तथा उनकी स्वीकृति के बाद ही टेंकर भरा जा सकेगा। यह व्यवस्था ठीक चल रही है।

"जल सहेली सदस्य तथा मैं दिन में एक बार तालाब पर जरुर जाते हैं, जिससे निगरानी रह सके। गांव के चरवाहों को जिम्मेदारी दी है कि बिना पर्ची के बाहर का टेंकर भरे या नियमों को तोड़े तो मुझे सूचना करें। शुरु में परेशानी आई। टेंकर वालों को समझाने के साथ-साथ झगड़ा किया। टेंकर वापस खाली भेजा। जल सहेली समूह के कारण मुझमें हिम्मत आई। जब भी तालाब संबंधी परेशानी होती है, फोन करने पर जल सहेली एकत्रित हो जाती हैं। जल सहेली लीडर की बैठकों में नियमित जाती हूं। अन्य गांव के अनुभव सुनने से समझ बनती है। बैठकों में लिए गए निर्णयों को गांव में लागू कराती हूं। आस-पास के कुछ गांवों में तालाब का आगौर राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज नहीं होने की चर्चा बैठकों में होती थी। जल सहेली सम्मेलन में जल स्त्रोतों की सुरक्षा एवं संरक्षण के मुद्दों के समाधान की मांग रखने के लिए नेटवर्क बना, उसमें स्वेच्छा से सदस्य बनी हूं। नेटवर्क सदस्यों के साथ जिला प्रमुख व कलेक्टर को ज्ञापन देकर समाधान की मांग रखी।"

''पहले तालाब विकास में केवल मिट्टी निकालने का काम होता था। हमने मिलकर आगौर से विलायती बबूल हटाने, पानी आवक चैनल को ठीक कराने का काम कराया। जल सहेली से जन सहयोग प्राप्त कर तालाब की पाल पर वृक्षारोपण कराया तथा उनकी देखभाल सभी मिलकर करते हैं। सुरक्षा के लिए कांटेदार बाड़ की है तथा सप्ताह में एक बार पानी डालने जाती हैं।''

इन्द्रा देवी

जल सहेली संगठन को पहचान दिलवाई

बालोतरा जिले के गांव आरंभा गोलिया निवासी इन्द्रो देवी के प्रयास से गांवाई तालाब की प्रबंधन व्यवस्था को मजबूती एवं पर्यावरण को संरक्षण मिला। इन्द्रा देवी ने वर्ष 2019 में उन्नति द्वारा संचालित मरुधरा में जल स्वावलम्बन परियोजना के तहत जल सहेली समूह का गठन किया। जल सहेली ने सक्रियता को देखते हुए इन्द्रा देवी को समूह का नेता चुना।

तालाब के जीर्णोद्धार एवं प्रबंधन व्यवस्था को मजबूत करने के लिए घर संपर्क कर लोगों को बैठक में जुड़ने के लिए तैयार किया। समुदाय की सहभागिता से तालाब विकास कार्यो को चिन्हित किया। इन्द्रा देवी बताती है कि उनकी समझ से पहला अवसर था जब समुदाय ने तालाब विकास योजना बनाई। तालाब की सुरक्षा दीवार, खुदाई, घाट निर्माण, आगौर की सफाई व समतलीकरण, सीमाज्ञान कराने के प्रस्ताव तैयार कर ग्राम पंचायत पाटोदी की ग्राम सभा में पारित कराए। कार्य की स्वीकृति होने की जानकारी मिली तो जल सहेली के सहयोग से काम की जरुरत वाली महिलाओं की पहचान कर आवेदन के लिए तैयार किया। महिलाओं को लेकर तीन किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत मुख्यालय पर आवेदन कराने गई।

वे बताती हैं कि ग्राम विकास अधिकारी को उनके संगठन के बारे में पता नहीं था। उन्होंने काम स्वीकृत नहीं होने की बात कह कर आवेदन लेने से इन्कार कर दिया। इंद्रा देवी सभी महिलाओं को लेकर पंचायत समिति पहुंच गई। जोरदार हंगामा किया। ब्लॉक विकास अधिकारी ने समस्या सुनी। ग्राम विकास अधिकारी को तुरंत आवेदन लेने और काम पर लगाने का निर्देश दिया। ''अब महिलाओं के साथ कोई भी काम लेकर ग्राम पंचायत में जाती हूं, तो बात सुनते हैं, काम करते हैं। कोई कार्यक्रम होता है, तो बुलाते हैं।''

महात्मा गांधी नरेगा काम चलने के दौरान महिलाओं को पूरा काम करने, काम गुणवत्ता से कराने के लिए नियमित निगरानी की। अमावश व पूर्णिमा को श्रमदान की परंपरा नियमित करने के लिए महिलाओं को प्रेरित किया। ''चाहे श्रमदान हो अथवा अन्य कार्य, जल सहेली सदस्यों को फोन पर सूचना करती हूं, आधे घंटे में सभी महिलाएं एकत्रित हो जाती हैं।''

आज से तीस साल पहले गोलिया तालाब से आस-पास के तीस पैंतीस गांव पानी पीते थे। तालाब में पानी समाप्त होने पर बेरियों से पानी मिलता था। गांव में पाइप लाइन द्वारा पानी की सप्लाई प्रारंभ होने के बाद अन्य गांवों के लोग पानी के लिए नहीं आते। गांव के लोगों ने तालाब की देखभाल छोड़ दी। तालाब की स्थिति खराब हो गई। आगौर में बबूल झाड़ियों के पत्ते व टहनियां तथा अन्य कचरा बहकर तालाब में आने से पानी खराब हो गया। बेरियों से पानी नहीं ले जाने से पानी नमकीन हो गया। तालाब को फिर से साफ-सुथरा किया। गांव में कोई भी अधिकारी या नेता आता है, तो तालाब विकास की मांग करते हैं। विधायक गांव में आए तो जल सहेलियों ने बेरी पर सोलर पंप लगाने का प्रस्ताव रखा जिससे पानी खींचने में महिलाओं की मेहनत कम हो। एक बेरी पर सोलर पंप लगा। गांव के लोगों को फिर से जल स्त्रोतों के साथ जोड़ने का काम किया है।

‘‘नाडी के आगौर से गांव के ही कुछ लोग घरों में भर्ती करने के लिए मिट्टी खोद कर ले जा रहे थे। मिट्टी खुदाई के दौरान मैं जल सहेलियों को लेकर पहुंची तथा उनको समझाया। यह मामा जी की ओरण है। यहां से लकड़ी तक उठाना मना है। आप मिट्टी खोद कर ले जा रहे हो। आज तक जो हुआ सो हुआ, आगे से मिट्टी नहीं ले जाने देंगे। उस दिन के बाद से अब कोई मिट्टी लेने नहीं आता।’’

जतु देवी

जन सहयोग से तालाब का जीर्णोद्धार करवाया

गांव घासिड़ा की जतु देवी जल सहेली समूह में जुड़ने के बाद घर से बाहर निकली। निरक्षर होने बावजूद उन्होंने समूह में नेतृत्व लेना प्रारंभ किया। मामा जी के ओरण में बने घासिड़ा नाडे को ठीक कराने के लिए गांव के लोगों को प्रेरित किया तथा जन सहयोग से काम कराए।

जतु देवी बताती हैं कि नाडे को ठीक कराने के लिए समुदाय की बैठक बुलाई तथा विकास के काम तय किए। प्रस्ताव पंचायत में दिए, लेकिन काम स्वीकृत नहीं हुआ। पंचायत में जाकर पूछा, तो बताया कि नाडे पर पहले काफी काम हो चुका है, इस लिए स्वीकृति नहीं मिल रही। मैंने सरपंच से सवाल किया कि पिछले आठ-दस सालों में तो कोई काम हुआ नहीं है। कागजों में हुआ है, तो अलग बात है।

पंचायत से स्वीकृति आए या नहीं, नाडे को ठीक कराने की मन में ठान ली। जल सहेलियों के साथ बैठक में निर्णय लिया कि हम स्वयं श्रमदान करेंगी जिससे गांव में चर्चा होगी। उसके बाद जन सहयोग की मांग करेंगे। नाडे में गांव की तरफ से तथा शमशान घाट की तरफ से गंदा पानी आता था। जल सहेलियों व गांव की महिलाओं को तैयार किया। श्रमदान से मिट्टी का बांध बनाकर गंदे पानी को रोका।

तल कमजोर होने के कारण नाडी में पानी कम रुकता था। तल में चिकनी मिट्टी बिछाने की जरुरत थी। समुदाय की बैठक बुलाई। उनके सामने यह प्रस्ताव रखा। प्रत्येक घर से रुपए 500 का जन सहयोग का निर्णय हुआ। पैसे एकत्रित कर बीकानेर क्षेत्र से चिकनी मिट्टी के दो ट्रक मंगवा कर तल में बिछाए। आगौर से पानी की आवक कम थी। दो कच्चे चैनल बनवाए। यह सारा काम श्रमदान व जन सहयोग से कराया। पहले पानी 10 से 15 दिन रुकता था। आवक बढ़ाने व तल में चिकनी मिट्टी डालवाने के बाद चार माह पानी रुका रहा।

जल सहेलियां नाडे की पूरी देखभाल करने लगीं हैं। तल में और मिट्टी बिछाने की जरुरत है। इस साल फिर जनसहयोग से राशि एकत्रित करेंगी तथा मिट्टी डलवाएंगी। औरण में काफी जीव-जंतु हैं। उनके पीने के लिए कहीं पानी नहीं है। नाडे को ठीक कराने पर उनको भी साल भर पानी मिलेगा।

"मुझे महात्मा गांधी नरेगा सामाजिक अंकेक्षण में ब्लॉक संदर्भ व्यक्ति बनने का अवसर मिला। मेरे काम को देखते हुए ब्लॉक विकास अधिकारी ने नौ ग्राम पंचायतों में मेट प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षक के रूप में जोड़ा। ग्राम पंचायत ने मेरा नाम पुलिस सखी के लिए भेजा तथा मेरा चयन हो गया। मैं चाहती हूं कि अन्य महिलाओं को भी इसी तरह हिम्मतवान बनाऊं।"

झमको देवी

समदरिया हिलोरने की प्रथा को पुनः जीवित किया

बागोड़ा के गांव मिंडावास की झमको देवी आजीविका चलाने के लिए खेती, मनरेगा में मजूदरी व सिलाई का काम करती हैं। पति नरसिंगा राम गांव में खुली मजदूरी व खेती में सहयोग करते हैं।

वे बताती हैं कि उन्नति द्वारा नवंबर 2021 में गांव में जल स्त्रोतों की स्थिति, विकास एवं प्रबंधन पर विचार करने के लिए समुदाय की बैठक रखी। इसमें जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार एवं प्रबंधन के लिए जल सहेली समूह के गठन का निर्णय हुआ। स्वेच्छा से 21 महिलाएं संगठन में जुड़ीं तथा सभी ने एकमत होकर उन्हें लीडर चुना।

हमारे क्षेत्र में समदरिया हिलोरने की परम्परा है। गांव में आई नई बहुएं ज्येष्ठ महीने में तालाब की मिट्टी निकालती हैं, आगौर को साफ करती हैं। बरसात के बाद जल स्त्रोत में पानी भरता है, तब पीहर से भाई को बुलाती हैं। नाडी पर उत्सव होता है। भाई-बहन एक दूसरे को नाडी का पानी पिलाते हैं। बहन भाई को पानी का मटका भेंट करती है तथा पीहर में जल स्त्रोत को ठीक रखने का संदेश देती हैं। पिछले 6-7 साल से नई बहुओं को गांव के तालाब से जोड़ने वाला यह कार्यक्रम नहीं हो रहा था। इस साल जल सहेली बैठक में इस परंपरा को चालू करने का निर्णय लिया। घर-घर जाकर महिलाओं को समदरिया हिलोरने के लिए प्रेरित किया। 15 महिलाएं तैयार हुईं तथा एक माह तक तालाब से मिट्टी निकालने, साफ-सफाई का कार्य किया। अन्य महिलाएं भी उनके सहयोग में जुड़ीं। समदरिया हिलोरने के कार्यक्रम में पूरा गांव जुड़ा। जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार का वातावरण बना।

गांव की अन्य महिलाओं को जोड़ने के लिए झमको देवी ने अनूठा रास्ता निकाला। निर्जला ग्याहरस के दिन पूरे गांव को श्रमदान में जोड़ने के लिए घर-घर जाकर सभी को सूचना दी। निर्जला ग्याहरस के दिन जल सहेलियां गांव के चौपाल में एकत्रित हुईं तथा गीत गाने लगी जिससे अन्य महिलाएं भी जुड़ गई। पूरे जोश के साथ श्रमदान संपन्न हुआ। इस साल बरसात अच्छी हुई तथा नाडी पूरी भर गई। जल स्त्रोत का जिर्णोद्धार होने से पूरा गांव खुश है। श्रमदान की परंपरा फिर से प्रारंभ हुई।

गांव मिंडावास में छः नाडियां हैं। देखरेख नहीं होने के कारण एक भी नाडी का उपयोग पेयजल के लिए नहीं होता था। नल से पानी आने लगा, तो लोग नाडियों को भूल गए। जल स्त्रोतों के विकास एवं प्रबंधन के लिए गांव में कभी बैठक नहीं होती थी। जल सहेलियों ने बात करना प्रारंभ किया। जल स्त्रोतों के महत्व पर चर्चा करने लगी। जल सहेली ने मुख्य तालाब एवं कोरी नाडी को उपयोगी बनाने का निर्णय लिया। समुदाय बैठक में सहभागिता से कार्यों की पहचान कर प्रस्ताव तैयार किया। जल सहेली के साथ पंचायत में प्रस्ताव दिया तथा पावती ली। जल सहेली को साथ लेकर बार-बार ग्राम पंचायत का विजिट कर प्रस्ताव की पूछताछ करतीं। प्रस्ताव पर स्वीकृति मिली तथा दोनों जल स्त्रोतों के विकास का कार्य हुआ।

झमको देवी बताती हैं कि तालाब के उपयोग के नियम बनाए हैं जिसका सभी पालन करते हैं। शुरुआती दौर में कुछ मुश्किलें आई। ''लोग कहते थे, क्यों समय बर्बाद करती हो। तुम्हें क्या मिलेगा। जैसे-जैसे मुझे जानकारी मिली, लोगों के काम कराने लगी। सरकारी योजनाओं के लाभ से जुड़ाव कराने, महात्मा गांधी नरेगा में रोजगार दिलाने से मेरी हिम्मत व आत्मविश्वास बढ़ा। लोगों का सहयोग भी मिलने लगा। छः लोगों की पेंशन कराई तथा दस जरुरतमंद लोगों को महात्मा गांधी नरेगा व श्रमिक कल्याण योजना से जुड़ाव कराया।

"महिलाएं अपने मुद्दों व उनके समाधान की गहरी समझ रखती है। जानकारी दें व सही तरीके से समझाएं तो महिलाएं जुड़ती हैं। ग्राम सभा में विकास संबंधी मुद्दों को रखती हैं, तो कार्य होते हैं। मैं इस प्रयास को जारी रखूंगी तथा बदलाव आएगा।"

कमला देवी

लोगों ने माना कि तालाब सम्बन्धित निर्णय जल सहेली के होंगे

जैसलमेर जिले की ग्राम पंचायत अड़बाला की कमला देवी के परिवार में आठ सदस्य हैं। भूमिहीन हैं तथा दूसरों की जमीन पर 50 प्रतिशत बटाई पर खेती करती हैं। इनके पास 10 बकरी, 15 भेड़ तथा एक गाय है जिससे आजीविका चलती है। गांव में सांवराई तलाई में साल भर पानी रहता है। आस पास के बारह गांव इस पर निर्भर हैं। तलाई में पानी खत्म होता है तो उसमें बेरी खोद कर पानी लेते हैं। जिन घरों में पानी संग्रहण के लिए टांका है वे तलाई से टेंकर द्वारा पानी मंगवाकर टांका भर लेते हैं। कुछ परिवारों के पास टांका नहीं है। वे मटके से पानी लाते हैं।

कमला देवी 20 सालों से तलाई की निगरानी कर रही हैं और वार्षिक श्रमदान के लिए लोगों को सूचना देती हैं। इसके अलावा हर महीने की अमावस्या व पूर्णिमा के दिन महिलाओं को एकत्रित कर तालाब पर ले जाती हैं और सभी मिलकर गाद निकालने, साफ-सफाई का काम करती हैं।

कमला देवी बताती हैं कि ''महिलाएं नाडी की साफ-सफाई तो पहले से करती रही हैं, परंतु आज तक किसी भी प्रकार के निर्णय में शामिल नहीं किया गया। उन्नति में जुड़ने और जल सहेलियों का संगठन बनाने के बाद हमने समझा कि जरूरत हमारी है, तो हमें तलाई संबंधित निर्णय करने होंगे।''

सभी ने मिलकर तलाई के विकास का नियोजन किया और मिट्टी निकालने, पानी बहाव से होने वाले कटाव को रोकने, पाल मजबूत करने के प्रस्ताव ग्राम पंचायत विकास प्लान में शामिल कराए। महात्मा गांधी नरेगा के तहत खुदाई, पाल निर्माण का कार्य हुआ। इस साल नाडी भरने के बाद ऑवरफ्लो के कारण खेतों का कटाव होने लगा, तब कमलादेवी ने गांव के लोगों को एकत्रित कर पानी को रोकने का काम किया।

वे बताती हैं कि ''जल सहेलियों ने तलाई से पानी बेचने के लिए टेंकर भरने पर रोक लगाई। जिन परिवारों के पास टांका नहीं है, मटका से रोज का पानी ले जाते हैं, उनके लिए साल भर पानी सुरक्षित रखने के लिए यह करना पड़ा। रोक के बाद एक टेंकर वाला पानी भरने आया, मैंने उसे रोका। वो नहीं माना, तो जल सहेलियों को इकट्ठा कर लिया और महिलाओं ने मिलकर उसकी पाइप को नाडी से बाहर फेंक दिया। टेंकर वाले को खाली लौटाया। गांव के लोगों ने साथ दिया। सप्ताह भर तनाव बना रहा। उसके बाद गांव की बैठक में निर्णय हुआ कि जरुरी परिस्थितियों में टेंकर से पानी ले जाने की छूट होगी और इसका निर्णय जल सहेली करेंगी। प्रति टेंकर पचास रुपये लिए जाएंगे और इस राशि का उपयोग नाडी के रख-रखाव के लिए होगा।

''सोलर कंपनी द्वारा नाडी से पानी उठाने पर प्रतिबंध लगाया। आगौर से मिट्टी खोद कर ले जाना बंद कराया। नियमों की पालना की निगरानी करती हैं। मुश्किल आने पर पंचायत व मुखियाओं का सहयोग लेती हैं। हमारे पूर्वजों ने बहुत संघर्ष कर यह नाडी बनाई थी, उनकी मेहनत को बेकार नहीं जाने दूंगी।''

कमला देवी

नाडी की निगरानी व्यवस्था मजबूत की

मालम सिंह की सिड में मेघवाल समुदाय की बुगलाई नाडी का आज भी लोग उपयोग करते हैं। गांव में पाइप लाइन से पानी सप्लाई आती है, लेकिन जरुरत के अनुसार पूर्ति नहीं होती। गर्मियों में नहरबंदी के दौरान दो-तीन महीने सप्लाई बंद हो जाती है। कमला देवी ने नाडी के साथ लोगों का जुड़ाव एवं विकास व प्रबंधन व्यवस्था को मजबूत करने का सफल प्रयास किया है। गांव की महिलाओं को संगठित कर व्यवस्थाएं अपने हाथ में ली। महिलाओं को प्रेरित कर जल सहेली समूह बनाया। काफी समय से बंद हुई श्रमदान की परंपरा के माध्यम से महिलाओं को जोड़ा और नियमितता प्रदान की। अब ग्याहरस व पूर्णिमा को महिलाएं नियमित श्रमदान करती हैं तथा इससे नाडी की निगरानी व्यवस्था मजबूत हुई हैं।

कमला देवी बताती हैं कि ''शुरु में महिलाओं को समझाने में मुश्किल आई। सर्वप्रथम आंगनवाड़ी पर समुदाय बैठक रखी जिसमें श्रमदान, प्रबंधन व्यवस्था एवं विकास कार्यों पर निर्णय लिए गए। जल सहेली समूह बनाया। पहली बार श्रमदान में 20-25 महिलाएं ही जुड़ी। मैंने गांव के अन्य जल स्त्रोतों का उदाहरण देकर महिलाओं को समझाया कि देख-रेख नहीं करने से वे अनुपयोगी हो गए। हमारे पूर्वजों ने बहुत संघर्ष और मेहनत कर यह नाडी बनाई थी। यह अनुपयोगी होगी, तो हमें पानी के संकट का सामना करना पड़ेगा। नहर सप्लाई बंद होने पर महंगे भाव में पानी खरीदना पड़ेगा। यह बात महिलाओं को समझ आई तथा वे जुड़ने लगी। आज मेघवाल समुदाय की सभी महिलाओं का जुड़ाव है।''

''निर्जला एकादसी के अवसर पर हमेशा श्रमदान होता है। महिलाएं तथा किशोरियां उपवास रखती हैं। पूरे दिन जलग्रहण नहीं करतीं। प्रत्येक महिला नाडी पर कम से कम 11 तगारी मिट्टी निकाल कर पाल पर डालती है। कमला जी ने भागीदारी बढाने के लिए घर-घर संपर्क किया। निर्जला एकादसी के दिन 250 के लगभग महिलाओं ने बुगलाई नाडी पर श्रमदान किया। अब महिलाएं अपनी मर्जी से आती हूँ''

वे बताती हैं, ''बुगलाई नाडी पर पिछले 15-20 वर्षो में विकास कार्य नहीं हुए। गांव के लोग मौखिक रुप से पंचायत में प्रस्ताव रखते, लेकिन काम नहीं हुआ। गांव के अन्य जल स्त्रोतों पर महात्मा गांधी नरेगा का काम होता रहा। वह भी गुणवत्ता से नहीं होता था। उन्नति के मार्गदर्शन में समुदाय की बैठक कर नाडी में कराए जाने वाले कार्यो का प्रस्ताव तैयार कर पंचायत में दिया तथा ग्राम सभा रजिस्टर में दर्ज कराया। सरपंच से बात कर काम स्वीकृत कराने की मांग की। गत दो सालों में नाडी पर घाट बंधाई, मिट्टी निकालने तथा आगौर समतलीकरण का काम हुआ। नाडी की भराव क्षमता बढ़ गई। आज इस नाडी से पूरा गांव पानी पीता है।''

पूर्व में बुगलाई नाडी की प्रबंधन व्यवस्था मजबूत थी। मेघवाल समुदाय के मुखिया प्रबंधन देखते थे। पानी की वैकल्पिक व्यवस्था होने के बाद लोगों की रुचि कम हो गई। दो-चार बुजुर्ग व्यवस्था को सुचारु करने में प्रयासरत हैं। कमला जी ने जल सहेली के सहयोग से नियम बनाए तथा पंचायत व समुदाय की बैठक बुलाकर सहमति ली।

"यह समझ बनी कि जिनको पानी की जरूरत है, उनको जल स्त्रेतों के विकास एवं प्रबंधन के लिए पहल करनी होगी, जिम्मेदारी लेनी होगी।"

कायमा देवी

तालाब ठीक करवाने की पहल की

जैसलमेर जिला के गांव खुईयाला की कायमा देवी जल सहेली लीडर हैं तथा प्रमुख जल स्त्रोत बनिए की नाडी को उपयोगी बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। वे बताती हैं कि बनिए की नाडी मुख्य जल स्त्रोत है तथा गांव के गरीब परिवार आज भी इस पर निर्भर हैं। टेंकर से पानी खरीदने की क्षमता नहीं होने के कारण कुछ परिवार आज भी मटके से पानी लेकर जाते हैं। बीस-पच्चीस वर्ष पहले पूरा गांव तालाब पर निर्भर था। तालाब का पानी खत्म होने के बाद लाखिना खड़ीन के पास कोट पार में बनी बेरियों से पानी लाते थे। प्रबंधन व्यवस्था मजबूत थी। गांव के बुजुर्ग मुखिया देखभाल करते थे। साल में एक बार बड़ा श्रमदान कर नाडी ठीक कराते थे। इस नाडी का निर्माण गांव के महाजन द्वारा कराया था, इस लिए इसका नाम बनिए की नाडी पड़ा।

गांव में पाइप लाइन द्वारा नहर के पानी की सप्लाई प्रारंभ होने के बाद नाडी पर से संपन्न लोगों की निर्भरता कम हो गई। प्रबंधन व्यवस्था को वही देखते थे, वह भी भंग हो गई। बेरियां सूख गई तथा नाडी में पानी कम समय तक रहने लगा। नहर से पानी की सप्लाई अनियमित रहती है। संपन्न लोग बड़े टांकों में पानी भंडारण कर लेते हैं। लेकिन गरीब परिवारों के पास छोटे टांके हैं। सप्लाई नहीं आने पर नाडी से पानी ले जाते हैं। कायमा देवी बताती हैं ''उन्नति द्वारा शामलात शोध यात्रा के दौरान नाडी पर बैठक में जुड़ी। यहां मुझे समझ आया कि पारंपरिक जल स्त्रोतों की अनदेखी करने से आने वाले समय में गरीब लोगों के सामने पानी का संकट आएगा। मैंने उस समय विचार किया कि और कोई पहल करे या नहीं, मैं तो करूंगी। मैंने अपने परिवार तथा आस-पास की महिलाओं से चर्चा की। सभी चाहते थे कि जल स्त्रोतों को ठीक कराना चाहिए, लेकिन कराएं कैसे यह समझ नहीं आ रहा था। मैं हताश हो गई।''

एक दिन सूचना मिली, उन्नति द्वारा नाडी पर मीटिंग रखी है, तो बिना देर किए शामिल हुई। जल स्त्रोतों के विकास एवं प्रबंधन पर चर्चा हुई तथा इस काम की जिम्मेदारी के लिए जल सहेली समूह का गठन किया गया। 18 महिलाएं जुड़ीं। उसके बाद लगातार बैठकें होती रहीं। नाडी व आगौर के विकास का प्लान बनाया। नाडी खुदाई, आवक चैनल, आगौर व बेरियों को ठीक कराने के प्रस्ताव तैयार कर पंचायत को सौंपे तथा कार्य कराने की मांग की। कार्य स्वीकृत होने के बाद गुणवत्तापूर्ण कार्य कराने के लिए महिलाओं को समझाती। उनको कहती कि नाडी में जितना अच्छा काम करेंगे, हमें ही फायदा होगा। समूह बनने से मुझ में हिम्मत आई। पंचायत बैठकों व ग्राम सभा में मुद्दे रखने लगी। श्रमदान के दिन टोली बनाकर नाडी पर जाती हूं तथा साफ-सफाई कराती हूं।

''गांव के किसी व्यक्ति ने काम में फर्जीवाड़े होने की शिकायत कर काम बंद करा दिया। मैं १२० महिलाओं को लेकर ब्लॉक विकास अधिकारी व उपखंड अधिकारी के पास गई तथा वार्ता की। उनको बताया कि हम पारंपरिक जल स्त्रोतों को उपयोगी बनाने का काम कर रही हैं। नरेगा के कार्य के अलावा श्रमदान से अतिरिक्त कार्य करती हैं। आप कार्यस्थल पर विजिट कर खुद देख लें। कार्य देख कर खुश हुए तथा काम फिर से चालू कराया।''

केसर देवी

नेतृत्व को नए आयाम दिए

बाप पंचायत समिति के जेतड़ासर की रहने वाली केसर बाई ने अपने गांव ही नहीं, ग्राम पंचायत के चार जल स्त्रोतों के विकास एवं प्रबंधन व्यवस्था बनाने का अनूठा उदाहरण पेश किया है। 78 वर्षीय केसर बाई परंपरागत दाई का कार्य करती हैं। प्रत्येक परिवार में इनकी पहुंच है तथा महिलाओं में इनके हुनर का सम्मान है। पारंपरिक नेतृत्व के अवसर को उन्होंने जल स्त्रोतों के विकास एवं प्रबंधन की तरफ मोड़ा। महिलाओं को अपने साथ जोड़ा और एक-एक करके पंचायत के चार जल स्त्रोतों को उपयोगी बनाया।

केसर बाई बताती हैं कि ''जेतड़ासर तालाब गांव का मुख्य जल स्त्रोत था। तालाब भरने के बाद मेघराजसर तालाब में पानी जाता था। पाइप लाइन से पानी सप्लाई प्रारंभ होने के बाद लोगों ने प्रबंधन छोड़ दी। तालाब में पानी खत्म होने के बाद मेघराजसर तालाब से टेंकर मंगवा लेते हैं। टेंकर से पानी नहीं खरीद पाने के कारण गरीब लोगों की निर्भरता तालाब पर थी।''

वे बताती हैं कि ''पहले लोग श्रमदान से नाडी को उपयोगी रखते थे। बाद में महात्मा गांधी नरेगा से कार्य होने लगा। गरीब परिवारों की महिलाओं को रोजगार की जरुरत थी, वो पूरा काम करतीं, लेकिन प्रभावशाली वर्ग के लोग काम नहीं करते थे। कुछ तो काम पर आते ही नहीं थे, उनकी हाजरी लग जाती थी। काम का मेजरमेंट एक साथ होने के कारण मजदूरी का भुगतान सभी का बराबर आता था। धीरे-धीरे काम करने वालों का मनोबल भी टूट गया और उन्होंने भी काम करना छोड़ दिया। तालाब की भराव क्षमता कम हो गई। कुछ लोगों ने आगौर में कब्जा कर लिया। पशुओं के बाड़े बना लिए। बरसात होने पर गोबर-मींगणी बहकर तालाब में आती थी। तालाब पर किसी का ध्यान नहीं जाता था।''

उन्नति द्वारा शामलात शोध यात्रा के दौरान गांव में बैठक हुई जिससे कुछ प्रेरणा मिली लेकिन बात आई-गई हो गई। दो वर्ष पूर्व उन्नति ने जल स्त्रोतों के विकास एवं प्रबंधन व्यवस्था में समुदाय की भागीदारी बढ़ाने के लिए बार-बार बैठकों का आयोजन किया। जल सहेली बनाने की चर्चा हुई। मुझे बात अच्छी लगी। मैंने महिलाओं को समझाया और उनको समूह में जोड़ा। महिलाओं व रुचि रखने वाले लोगों को साथ लेकर तालाब व आगौर का भ्रमण कर विकास एवं प्रबंधन के कार्यो की पहचान की। नाडी का सीमाज्ञान कराना, आगौर व नाडी के आस-पास विलायती बबूल की झाड़ियां कटवाना व सफाई कराना, तालाब खुदाई, पाल की ऊंचाई बढ़ाने के कार्य पहचाने गए। प्रस्ताव तैयार कर जल सहेली समूह के साथ पंचायत में दिए। पंचायत से पता चला कि नाडी खुदाई व आगौर सफाई का कार्य स्वीकृत है। जल सहेली के साथ चर्चा कर आवेदन की तैयारी की। महिलाओं को साथ लेकर काम के आवेदन कराए। 120 महिलाओं को रोजगार दिलाया। काम चालू होने के बाद कार्यस्थल पर महिलाओं से मिलती, काम पूरा करने के लिए प्रेरित करती। इस प्रकार नरेगा कार्य में भी सुधार कराया।

जेतड़ासर तालाब के अतिरिक्त बोहरानाडा, अणदासर नाडी में समुदाय बैठकों में जाकर प्रेरित किया। विकास कार्य के अतिरिक्त प्रबंधन व्यवस्था बनाई। नए बने राजस्व गांव हाफजनगर में नाडी नहीं थी। लोगों ने बताया कि गैर मुमकिन मगरा है, नई नाडी बन सकती है। पंचायत में प्रस्ताव देकर नई नाडी पर कार्य स्वीकृत कराया। अभी काम चल रहा है। पूर्ण होने के बाद वहां भी प्रबंधन व्यवस्था के नियम बनवाउंगी।''

''जब भी समस्या आती, जल सहेली समूह की बैठक बुलाती व निर्णय लेकर काम कराती हूं। तालाब भरने के बाद जल सहेली व समुदाय की बैठक कर प्रबंधन के नियम बनाए। नाडी के आगौर में गंदगी करना, कचरा डालना, किनारे बैठ कर शराब पीने तथा सोलर कंपनी को पानी बेचने पर पाबंदी लगाई। जब भी समय मिलता है, तो नाडी का एक चक्कर जरूर लगाती हूं। अमावश, पूर्णिमा के दिन महिलाओं साथ लेकर श्रमदान करने जाती हूं। लोगों का तालाब के साथ फिर से जुड़ाव हो गया। गरीब परिवारों के लिए साल भर पानी की पुख्ता व्यवस्था हो गई। इस कार्य को जारी रखूंगी। नई पीढ़ी का जुड़ाव बढ़ाउंगी।''

लीला खातु

आगौर को से बचाया

बाप ब्लॉक के कानासर गांव की रहने वाली लीला खातु ने पंद्रह वर्षो से अनुपयोगी हुए चांदासर तालाब को उपयोगी बनाने एवं प्रबंधन व्यवस्था स्थापित करने की ठानी, तो पीछे नहीं हटीं। देख-रेख के अभाव में वीरान हुआ तालाब आज साफ जल से भरा है। वह बताती हैं कि पंद्रह वर्ष पहले तक गांव के प्रभावी लोग प्रबंधन व्यवस्था चलाते थे। नहर से पानी की सप्लाई चालू होने के बाद परंपरा से प्रबंधन व्यवस्था चलाने वालों ने देखभाल छोड़ दी। तालाब व आगौर में विलायती बबूल की झाड़ियां उग गई। लोग गंदगी करने लगे। महिलाओं ने डर के मारे तालाब पर जाना छोड़ दिया।

कुछ समय तक नहर की सप्लाई नियमित रही, बाद में अनियमित हो गई। प्रतिदिन आने वाली पानी की सप्लाई सप्ताह में एक-दो दिन आने लगी। गर्मी के मौसम में मरम्मत एवं सफाई के लिए हर साल नहर बंदी के समय पानी का संकट रहने लगा। संपन्न लोग बड़े टांकों में सप्लाई का पानी भंडारण कर टेंकर से बेचने लगे। गरीब परिवारों के पास भंडारण संसाधन कम होने के कारण उनको टेंकर से पानी खरीदना पड़ता था। महात्मा गांधी नरेगा से तालाब विकास कार्य गुणवत्तापूर्ण नहीं होता था।

गरीब लोगों को तालाब की आवश्यकता महसूस होने लगी, लेकिन पहल व मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं था। दो वर्ष पूर्व उन्नति ने जल स्त्रोतों के विकास और प्रबंधन व्यवस्था मजबूत करने के लिए समुदाय की बैठक रखी तथा तालाब को उपयोगी बनाने के तरीके पर चर्चा हुई। जल सहेली समूह का गठन किया एवं लीला खातु को सर्वसम्मति से नेता चुना। तालाब को उपयोगी बनाने के लिए क्या-क्या काम कराए जाने हैं, उनकी पहचान कर प्रस्ताव तैयार किए तथा पंचायत को दिया। महिलाओं को रोजगार की आवश्यकता थी। नरेगा में आवेदन के लिए दिन तय किया। सभी महिलाओं को साथ लेकर लीला खातु पंचायत में आवेदन करने गई। सरपंच ने कहा कि नाडी का काम स्वीकृत है। लोग पूरा काम करते नहीं है, इस लिए कार्य चालू नहीं कर रहे। जल सहेली ने काम पूरा कराने की जिम्मेदारी ली। जल सहेली ने तय किया कि तालाब के जीर्णोद्धार के लिए कुछ भी करना पड़ा, करेंगे।

महात्मा गांधी नरेगा कार्य चालू हुआ तथा लोगों ने पूरा कार्य किया। गुरुवार को अवकाश के दिन महिलाओं ने श्रमदान किया। सरपंच को पुनः तालाब पर बुलाया तथा कार्य दिखाया। जन सहयोग व श्रमदान से कार्य कराए जाने के लिए सहयोग की मांग की। सरपंच ने स्वयं से शुरुआत की तथा आगौर से बबूल की झाड़ियां कटवाने के लिए सात जेसीबी व 11 ट्रेक्टर लगा दिए। धीरे-धीरे लोगों को पता चला तथा गांव के अन्य लोग भी सहयोग में आगे आए। 35 लाख रुपए का जन सहयोग एकत्रित हुआ। पूरा आगौर साफ हो गया। नरेगा से तालाब की खुदाई हुई। पहली बरसात में तालाब पानी से भर गया।

तालाब आगौर में पुलिस चौकी के लिए भूमि नापने के लिए प्रशासन आया। सूचना मिलने पर मैंने जल सहेली व गांव के निर्णायक लोगों को साथ ले व मौके पर पहुंची। प्रशासन को बताया कि यह तालाब का आगौर है, इसके किसी प्रकार का निर्माण नहीं करने देंगे। भले ही रिकॉर्ड में यह सरकारी जमीन के नाम से दर्ज है, हम पीढ़ियों से इसमें आगौर के रुप में उपयोग कर रहे हैं। पुलिस चौकी के लिए जमीन नहीं दी।

लीला खातु ने बताया कि छः माह तक तालाब को उपयोगी बनाने के लिए दिन-रात एक कर दिए। कभी समुदाय की बैठक बुलाई, कभी ग्राम पंचायत में गए।

''नाडी का जीर्णोद्धार एवं प्रबंधन व्यवस्था बनने से गरीब लोगों को पानी की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। नाडी का विस्तार कराना है, ताकि वर्ष भर पानी मिल सके।''

मलूका जी

आगौर में गंदगी करने से रोका

बाप अणदासर गांव की सत्तर वर्षीय मलूका जी ने गांव की नाडी का जीर्णोद्धार एवं प्रबंधन को मजबूत करने की पहल की है। अणदासर तालाब के किनारे से फलोदी-बीकानेर हाइवे निकलता है। सड़क के पश्चिम में तालाब तथा पूर्व की तरफ होटल हैं। होटल पर रुकने वाले लोग आगौर की तरफ गंदगी करते थे व होटलों वाले भी कचरा डाल देते। लोगों ने नाडी का पानी पीना छोड़ दिया था। देखभाल भी छोड़ दी। पानी टेंकर से डलवाने लगे। गरीब लोगों के लिए टेंकर से पानी खरीदना मुश्किल था, लेकिन दूसरा कोई विकल्प नहीं था। मलूका जी ने सभी मुद्दों के समाधान के रास्ते निकाले तथा नाडी को उपयोगी बनाया।

मलूका जी बताती हैं, ''उन्नति ने नाडी को फिर से उपयोगी बनाने के लिए समुदाय बैठक की। जल सहेली संगठन बनाने पर चर्चा हुई। मैंने महिलाओं को समझा कर जल सहेली समूह बनाया। मन में नाडी को उपयोगी बनाने की रुचि को देखते हुए महिलाओं ने मुझे नेता चुन लिया। पहली बैठक में नाडी के विकास एवं प्रबंधन से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। महात्मा गांधी नरेगा के तहत होने वाले कार्य में गड़बड़ी का मुद्दा प्राथमिकता से आया। लोगों ने बताया कि नाडी पर काम करने कोई नहीं आता। रोजगार की जरुरत वालों को काम नहीं दिया जाता। कुछ लोगों की घर बैठे हाजरी लगाई जाती है। मजदूरी का आधा पैसा बिचौलियों को देकर कुछ लोग घर बैठे पैसे लेते हैं। सबसे पहले इसी मुद्दे का समाधान करने की ठानी। महिलाओं को लेकर पंचायत आवेदन कराने तथा नाडी पर पूरा काम करने के लिए तैयार किया। पंचायत में जाकर आवेदन कराए तथा नाडी की खुदाई, पाल बंधाई व आगौर की सफाई का काम कराया।''

हाइवे पर बने होटल वालों को आगौर में कचरा नहीं करने के लिए पाबंद करना था। गांव के निर्णायक लोगों का सहयोग लिया। होटल मालिक को बताया कि सड़क की पश्चिम दिशा में नाडी का आगौर है। इस तरफ कचरा व गंदगी नहीं होनी चाहिए। होटल मालिक ने हमारी बात मान ली। अब आगौर की तरफ गंदगी नहीं करते। जल सहेली बराबर निगरानी करती हैं। रामदेवरा मेले के दौरान पद यात्री तालाब को गंदा नहीं करें, इसके लिए परिवार वार सदस्यों को निगरानी की जिम्मेदारी दी तथा इस वर्ष मेले के दौरान सभी ने बारी-बारी से सेवाएं देकर यात्रियों को समझाया।

समुदाय बैठक बुलाकर नाडी की स्वच्छता एवं उपयोग के नियम बनाए हैं तथा जल सहेलियों के सहयोग से उनकी पालना कराती हैं। नाडी पर नियमों का बोर्ड लगाने से काफी फर्क आया है। होटल वाली दिशा में दो जगह पर गंदगी नहीं करने वाले निर्देश के बोर्ड लगाने के लिए प्रत्यके सदस्य से जन सहयोग का निर्णय हुआ है। जल्दी ही वहां बोर्ड लगाएंगी।

नाडी के अंदर गंदा पानी आता था। महात्मा गांधी नरेगा के तहत आगौर के दोनों तरफ बंधा बनवा कर समाधान किया। पाल पर पंचायत द्वारा 35 पौधे लगाए थे, उनको पानी पिलाने एवं सुरक्षा के लिए एक जल सहेली सदस्य ने एक पौधा गोद लिया है। शुक्रवार को श्रमदान तथा पौधों को पानी पिलाने का काम होता है।

''हमें लगा कि सिर्फ नियोजन कर ग्राम पंचायत में प्रस्ताव देने से काम नहीं चलेगा। हमें अनियमितताओं पर ठोस प्रहार करना होगा। पूरा काम करेंगे और पूरा दाम लेंगे।''

मीरों देवी

'पूरा काम पूरा दाम' के किये प्रयास

मनचीतिया की मीरों देवी बताती हैं, ''हरपालिया नाडी का नाम हमारे पूर्वज हरपालजी के नाम पर रखा गया, जिन्होंने पानी की किल्लत का समाधान करने के लिए 200 साल पहले नाडी खोदी थी। वे बताती हैं कि लोगों के पास वर्षा जल सग्रहण के लिए टांके नहीं बने हैं। उनके जैसे कई परिवारों के लिए नाडी ही मात्र जल स्त्रोत है।''

मीरों देवी के पति हृदय रोग से ग्रसित हैं और बीकानेर के प्राइवेट अस्पताल में इलाज चल रहा है। मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण और इलाज के खर्चे के बीच जिन्दगी कठिनाई से गुजर रही है। इन परिस्थितियों में भी मीरों देवी गांव की हर बैठक में अचूक भागीदारी निभाती हैं। एक वर्ष पूर्व जल सहेलियों का संगठन बना, और इन्हें नेतृत्व की भूमिका मिली।

जल सहेली समूह ने नाडी के विकास का विस्तृत नियोजन बनाया, प्रस्ताव तैयार किए और पंचायत में दिए। उन्हें लगा कि सिर्फ इससे बात नहीं बनेगी। क्योंकि पहले की तरह काम स्वीकृत होगें तो भी किए नहीं जाएंगे। उन्होंने सबसे पहले विचार किया कि वे महात्मा गांधी नरेगा के कार्यान्वयन में अनियमितताओं पर प्रहार करेंगी। वर्षो से गांव की नाडी पर कोई काम नहीं हुआ था। काम स्वीकृत किए जाते हैं, परंतु कार्यान्वित नहीं होते। श्रमिकों को घर बैठे आधी मजदूरी दे दी जाती थी।

''नौ साल बाद मैंने 60 महिलाओं को तैयार किया और महात्मा गांधी नरेगा के तहत काम मांग के आवेदन कराए, रसीद दिलवाई। महिलाओं को तैयार किया कि पूरा काम करेंगे और पूरा दाम लेंगे। पुराने मेट ने काम करने से मना कर दिया, तो जल सहेलियों ने गांव की पढ़ी-लिखी महिला को मेट लगा लिया। नाडी पर पहली बार मेरी निगरानी में गुणवत्तायुक्त काम हुआ और श्रमिकों को पूरा पैसा मिला। इस शुरुआत के बाद स्वैच्छिक संस्था व जन सहयोग से नाडी के आगौर से झाड़ियों को काटा गया और साफ-सफाई हुई।''

मीरों देवी को विश्वास है, कि इन कामों के कारण अगली बरसात तक नाडी में पानी रहेगा। उन्होने अपने जैसे साधन-विहीन 12 परिवारों की 'अपना खेत अपना काम योजना' में टांका बनवाने की अर्जी ग्राम पंचायत में दिलवाई है। जल सहेली का काम देखकर गांव के अन्य लोग सहयोग करने लगे हैं।

‘‘तालाब गांव के पास है, महिलाएं घड़ा भरने के लिए दिन में कई बार आती हैं, इससे निगरानी हो जाती है। जल सहेली समूह कुम्हारकोठा तालाब को अपना परिवार मानती हैं। जब भी तालाब के विकास एवं प्रबंधन को लेकर जरूरत होती है, मेरी एक आवाज पर महिलाएं इकट्ठा हो जाती हैं।’’

मिशरां देवी

तालाब की सतत निगरानी की व्यवस्था बिठाई

जैसलमेर जिले के कुम्हारकोठा गांव की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता मिशरां देवी जिज्ञासा से भरपूर हैं। वे बताती हैं कि जब से गांव में आई हैं, तब से नाडी से उनका जुड़ाव हो गया है। पहले हर ग्यारस व पूर्णिमा को महिलाएं नाडी और आगौर की साफ-सफाई करती थीं। बुजुर्ग महिलाएं अगुवाई करतीं और उनके पीछे गांव की अधिकतर महिलाएं श्रमदान करती थीं। ये रीति-रिवाजों, परंपराओं और जल संसाधनों को गहराई से समझने के मौके होते थे। लेकिन धीरे-धीरे नई पीढ़ी इनसे दूर होने लगी।

मिशरां देवी बताती हैं कि ‘‘जब उन्नति द्वारा नाडी पर बैठकें की गई और जल सहेली समूह के गठन का प्रस्ताव रखा, तो उनमें फिर से ऊर्जा आई। सभी को लगा कि सबसे पहले तो बेचने के लिए पानी उठाने वाले बाहर के टेंकरों को रोकने की जरूरत है। मार्च महीने से नाडियों में पानी कम होना शुरु होता है, तो आस-पास के गरीब परिवार घड़ा भर कर रोज जरूरत का पानी ले जाते हैं। टेंकर वाले पानी उठा लेते हैं, तो उनके लिए नहीं बचता। ऐसे परिवारों को पानी की ज्यादा दिक्कत होती है। कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण पानी खरीदना मुश्किल होता है। पानी किसी प्रकार खरीदें भी, तो घर में संग्रहण की व्यवस्था नहीं है।’’

मिशरां देवी जल सहेलियों के साथ तालाब की निगरानी करने लगीं। एक बार गांव का टेंकर वाला पानी भरने आया, तो महिलाओं ने उसे टेंकर नहीं भरने के लिए समझाया। वह नहीं माना तो, उसके टेंकर से पाइप खींचकर पानी से बाहर निकाल दिया। टेंकर खाली वापस भेजा। पिछले वर्ष बाहर से आए एक पशु चरवाहे ने अपने पशुओं को पानी पिलाने के बाद आगौर में बिठा दिया। जल सहेली ने पशुओं को हटवाया तथा उनके गोबर को भी चरवाहे से साफ कराया। उसके बाद चरवाहे अपने पशुओं को पानी पिलाने के लिए जल सहेली द्वारा निर्धारित की गई जगह से लाते हैं और उसी मार्ग से वापस ले जाते हैं। कोई भी तालाब के आगौर में कचरा करता है, उससे कचरा उठवा कर आगौर से बाहर डलवा देती हैं।

"गांव का व्यक्ति पाल से मिट्टी ट्रौली भरकर ले जा रहा था। सूचना मिलने पर चार अन्य महिलाओ को साथ लेकर मैं तालाब पर गई तथा उसे रोका। सरपंच से बात की तो उन्होंने व्यक्ति को बताया कि जल सहेलियों ने मिट्टी ले जाना बंद किया है। ट्रौली खाली कराई गई जिससे गांव में चर्चा हुई। यह घटना सभी के लिए सबक बनी।"

मौरों कुमारी

नाड़ी के नियम न मानने पर सबक सिखाया

बागोड़ा के गांव चैनपुरा की मौरों कुमारी बीए तक पढी हुई हैं। घरेलू कार्यो की जिम्मेदारी के अलावा महात्मा गांधी नरेगा में मेट हैं। वे बताती हैं "मैं जल सहेली संगठन में पिछले दो साल से जुड़ी हूं। 21 महिलाएं सदस्य हैं जिन्होंने मुझे समूह की लीडर चुना है। जल सहेली को साथ लेकर तालाब पर काम करवाने के लिए प्रस्ताव तैयार कर ग्राम पंचायत में दिया और उसकी पावती रसीद ली। कार्य स्वीकृत हुए तथा वर्तमान में चल रहे हैं। चैनपुरा जाने वाली सड़क साइड में पाल की हाइट बढ़ाने, तल को समतल करने का कार्य कराया। मैं मेट हूं तथा महिलाओं की समझ बनाकर तालाब पर पूरा काम करा रही हूं। महिलाओं का पूरा सहयोग मिल रहा है।"

कुछ लोग नाडी से चिकनी मिटटी खेत में डालने के लिए ले जाते थे। सितम्बर 2021 में जल सहेली समूह ने बैठक में मिट्टी ले जाना बन्द कराने का निर्णय लिया। उन्होंने खाई लगाकर रास्ता बन्द किया। गांव के मुखियाओं को निर्णय से अवगत कराया तो उन्होने सहयोग का आश्वासन दिया। 22 जुलाई 2022 को ग्राम पंचायत के साथ बैठक कर तालाब प्रबंधन के नियम पारित करवाए तथा लिखित बोर्ड लगाया जिससे सभी को जानकारी रहे।

"हर महीने अमावस, ग्यारस, पूर्णिमा को तालाब पर श्रमदान को वापस चालू कराया। मै गांव में सूचना करती हूं तथा महिला-पुरुष जुड़ते हैं। आगौर की सफाई व मिट्टी निकालने का काम करते हैं। उन्नति द्वारा प्रसारित रेड़ियों कार्यक्रम में मेरे द्वारा जल स्त्रोतों को ठीक कराने के लिए किए गए प्रयासों को बताने का मौका मिला। रेड़ियो पर अपनी बात सुन कर खुशी हुई।"

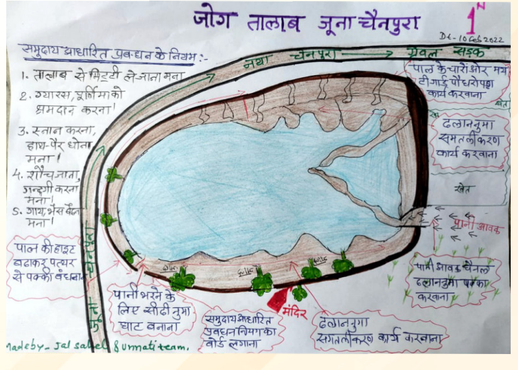

"बैठकों में जाने, दूसरी जगह के तालाब सुधार की बातें सुनने से प्रेरणा मिली तथा मेरे गांव का तालाब ठीक कराने की ठानी। ग्राम पंचायत में हमारी बात को सुना जाता है। जानकारी बढ़ी जिससे मुझे खुशी है। आज तालाब की काया पलट गई। जहां महिलाएं अकेले जाने से डरती थीं, निडर होकर जाती हैं। अब वहां रौनक रहती है।"

मोवन देवी

श्रमदान में लोगों को जोड़ने के विभिन्न तरीके अपनाए

बागोड़ा के सेवड़ी गांव की रहने वाली मोवन देवी की आजीविका का मुख्य जरिया खेती है। गांव के तालाब को ठीक कराने के लिए 33 महिलाओं को जोड़कर जल सहेली समूह बनाया तथा उनका नेतृत्व करती हैं। हर महीने ब्लॉक स्तर पर जल सहेली लीडर्स की समीक्षा एवं नियोजन बैठक में आती हैं। अपने गांव में किए गए प्रयासों के बारे में बताती हैं। बैठक में लिए गए निर्णयों को जल सहेली के साथ साझा कर काम करवाती हैं।

वे बताती हैं कि गांव के मुख्य तालाब सेवड़ी की लंबे समय से देख-रेख नहीं होने के कारण बबूल की इतनी झाड़ियां उग गई कि तालाब व आगौर के एक छोर से दूसरे छोर तक जाना संभव नहीं था। महिलाएं तालाब पर अकेले जाने से डरती थीं। महात्मा गांधी नरेगा के काम पर ग्रुप बनाकर जाती थीं। उन्नति के कार्यकर्ता द्वारा बार-बार बैठकें करने से मुझे समझ आया कि तालाब को ठीक कराना चाहिए। मैंने बाकी महिलाओं को समझाया और संगठन बनाया।

तालाब को ठीक कराने के लिए गांव का सहयोग जरूरी था। मैंने फोन से तथा घर-घर जाकर सूचना दी। पांच बार समुदाय की बैठकें की। सरपंच, वार्डपंच को भी बुलाया। तालाब को ठीक कराने के लिए काम चिन्हित किए। प्रस्ताव तैयार कर ग्राम पंचायत में दिए। कार्य स्वीकृत हुए तथा हमारे द्वारा सोचे गए कार्य करवाए।

मोवन देवी बताती हैं, बैठकों में जाने, अन्य गांवों के अनुभव सुनने से उनकी समझ व हिम्मत बनी। वहां जो भी कार्य तय होते, गांव में जल सहेली बैठक कर इन कार्यों को करना तय करती। इस साल नवोणी ग्यारस को श्रमदान करने का निर्णय लिया। क्या काम करने हैं, तय किए। पूरे गांव में घर-घर जाकर, फोन व व्हाटसएप ग्रुप में मेसेज द्वारा सूचना की। पंचायत को भी आमंत्रित किया। श्रमदान में 500 लोगों की भागीदारी रही। बबूल कटाई व आगौर सफाई का काम पूरा किया।

तालाब पर रख-रखाव की नियमितता के लिए नियम बनाने का निर्णय हुआ। जल सहेली के सहयोग से समुदाय की बैठक रखी। पूर्व में क्या नियम थे, उन पर चर्चा हुई। नए नियम जोड़े गए। ग्राम पंचायत में नियमों को पारित कराया। पंचायत ने नियम तोड़ने वालों पर रुपए 500 के जुर्माने का प्रावधान जोड़ा। नियमों को लिख कर तालाब पर बोर्ड लगाया। सभी को नियमों की जानकारी हो गई।

“अतिक्रमण करने वाले को हिदायत दी कि दुबारा अतिक्रमण किया, तो कानूनी कार्यवाही की जाएगी। इससे जल सहेली की जीत हुई। वर्षो पुराना अतिक्रमण हटा दिया।”

नींबू देवी

वर्षो पुराना अतिक्रमण हटवाया

जिला जैसलमेर ब्लॉक सम के मसूरड़ी गांव की नींबू देवी ने लालेरी तालाब के आगौर से अतिक्रमण हटाने का अनूठा कार्य किया। वह बताती हैं कि उन्नति द्वारा गांव में जल स्त्रोतों के विकास एवं प्रबंधन को लेकर बैठक रखी जिसमें वे जुड़ीं। लालेरी तालाब गांव का प्रमुख जल स्त्रोत था। तालाब में पानी खत्म होने पर मसूरड़ी खड़ीन में बनी बेरियों से पानी लाते थे। गांव में पाइप लाइन से पानी सप्लाई शुरु होने के बाद तालाब की देखभाल छोड़ दी। कुछ लोगों ने आगौर पर अतिक्रमण कर लिया, लेकिन रोकने-टोकने वाला कोई नहीं था।

पारंपरिक जल स्त्रोतों के महत्व, उनके जीर्णोद्धार को लेकर समुदाय को प्रेरित करने के लिए उन्नति ने बैठक रखी। इनको ठीक कराने एवं देखभाल के तरीकों पर चर्चा हुई। जल सहेली समूह का गठन कर उनके द्वारा पहल करने का विचार रखा। कुछ महिलाएं स्वेच्छा से सदस्य बनीं। नींबू देवी कहती हैं ‘‘धीरे-धीरे मैंने महिलाओं को समझाने एवं समूह में नाडी पर श्रमदान करना शुरु किया। मैं आगे बढ़ कर काम की पहल करतीं। हर महीने जल सहेली बैठक व श्रमदान के लिए सूचना देने लगी तो महिलाओं ने मुझे नेता मान लिया। जल सहेली लीडर की हर महीने होने वाली बैठक में जुड़ती हूं। अलग-अलग गांवों से आने वाली लीडर अपने द्वारा किए गए कार्यो के बारे में चर्चा करती, तो मेरा भी मनोबल बढ़ा।

जल सहेली की हरेक बैठक में लालेरी के आगौर में अतिक्रमण के मुद्दे पर चर्चा होती तथा जल सहेली लीडर बैठक में चर्चा करती। मुझे लगा कि हिम्मत दिखाने से काम बनेगा। तालाब के आगौर से अतिक्रमण हटाने के लिए पहले जल सहेली समूह के सदस्यों को पक्का किया। उनकी सहमति के बाद गांव के निर्णायक लोगों से चर्चा कर उनका समर्थन लिया। गांव में युवाओं का संगठन है उनसे भी सहयोग लिया। अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति को समझाने गए, लेकिन वह नहीं माना। उसका कहना था कि मेरा कब्जा पुराना है।

जल सहेली लीडर बैठक में प्रशासन गांव के संग अभियान की सूचना एवं इसमें होने वाले कार्यो की तैयारी पर चर्चा हुई। नींबू देवी ने गांव में आकर लोगों को बताया। शिकयत पत्र तैयार कर लोगों के हस्ताक्षर कराए। अभियान के दिन जल सहेली व युवक मंडल को साथ लेकर प्रशासन से अतिक्रमण हटाने की मांग की। प्रशासन ने मौके पर जाकर कार्यवाही की तथा अतिक्रमण हटा दिया।

"धीरे–धीरे सरपंच ने प्रलोभन देकर कुछ महिलाओं को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया। मुझे भी कहा कि तुम्हारे इंदिरा आवास बनवा दूंगा। मैं प्रलोभन में नहीं आई तथा महिलाओं को भी सचेत किया।"

पन्ना प्रजापत

काम लेने के लिए महिलाओं के साथ धरने पर बैठी

बाप लॉक के सांवरा गांव की पन्ना प्रजापत ने ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाते हुए संचालन में सुधार का प्रयास कर महात्मा गांधी नरेगा के वार्षिक प्लान में जल स्त्रोतों व गांव के अन्य विकास कार्यो को शामिल कराने एवं जरुरतमंद लोगों को रोजगार दिलाकर नरेगा कार्य प्रावधान के अनुसार चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पन्नाजी ने बताया कि महात्मा गांधी नरेगा में घर बैठे आधे पैसे देने की परंपरा बन गई थी। उन लोगों के ही नाम मस्टररोल में आते थे, जो बिना काम किए मजदूरी प्राप्त कर आधे पैसे बिचौलियों को देते थे। जेसीबी से कुछ काम करवा देते थे। इससे गांव में कोई भी विकास कार्य नहीं होता था। जिन लोगों को रोजगार की जरुरत थी, उनके आवेदन नहीं लिए जाते थे। ''मैं महिलाओं को लेकर पंचायत में गई। सरपंच व ग्राम सेवक को बताया कि गांव के मॉडल तालाब में कार्य चल रहा है लेकिन वहां एक भी मजदूर काम नहीं कर रहा है। इन महिलाओं को रोजगार की जरुरत है, आप आवेदन नहीं ले रहे हैं। ग्राम विकास अधिकारी व सरपंच को आश्चर्य हुआ कि अचानक महिलाएं सवाल कैसे उठाने लग गई। उन्होंने पूछा कि आपको किसने भड़काया है। तब मैंने जवाब दिया कि हमारा संगठन है। अब विकास कार्यो में गड़बड़ी नहीं होने देंगे। सरंपच व ग्राम विकास अधिकारी ने तुरंत आवेदन स्वीकार कर लिए।''

मस्टररोल जारी हुए, तो मेट ने काम करने से इन्कार कर दिया। जल सहेली ने महिला मेट का चयन कर काम चालू कराया। एक पखवाड़ा काम चला, महिलाओं ने पूरा काम किया, लेकिन बिचौलियों को पैसा नहीं देने के कारण भुगतान कम आया। दूसरे पखवाड़े के लिए सरपंच ने आवेदन लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि आप काम नहीं करते हो। मैं सभी महिलाओं को लेकर सरपंच के घर के आगे धरने पर बैठ गई। वार्ता हुई तथा सरपंच ने आवेदन लेने का आश्वासन देने पर धरना उठाया।

दो अक्टुबर की ग्राम सभा की जानकारी मिली। नाडी व अन्य विकास कार्यो के प्रस्ताव तैयार किए। 20 महिलाओं को लेकर ग्राम सभा में गई। सरपंच व ग्राम सेवक आए तथा महात्मा गांधी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर ग्राम सभा समाप्त कर दी। पन्ना जी ने ग्राम विकास अधिकारी से कहा कि आज महात्मा गांधी नरेगा के आगामी वर्ष के विकास कार्यो के प्रस्ताव लेने की जानकारी मिली है। हमारे मुद्दों के प्रस्ताव लिखो। काम के आवेदन लो। ग्राम सेवक ने नाडी जीर्णोद्धार, सड़क व सभा भवन बनवाने के प्रस्ताव लिखे। रोजागर के आवेदन लिए।

''हमारे पास न ट्यूबवैल है, न नहर का पानी। तालाब को नहीं बचाया तो मेरे जैसे १५० परिवार पानी के लिए कष्ट झेलेंगे।''

पारू देवी

नवणी ग्यारस पर श्रमदान की मुहिम चलाई

जालौर जिले के लुणावास गांव में ज्यादातर परिवारों के अपने ट्यूबवैल हैं और नहर का पानी भी घर तक आता है। लेकिन हाशिए पर रहने वाले 150 परिवारों के पास न ट्यूबवैल है, न ही नहर के पानी तक पहुंच। वे पानी के लिए गांव के तालाब पर निर्भर हैं। ऐसा ही परिवार है पारु देवी का। वे बताती हैं कि ''ज्यादातर परिवार तालाब का उपयोग छोड़ चुके हैं, वे इसके रख-रखाव पर ध्यान नहीं देते। गन्दगी भी कर देते हैं।'' पिछले साल उन्नति द्वारा तालाब की स्थिति को लेकर की गई सामुदायिक बैठकों से उन्हें संबल मिला। उन्हें एहसास हुआ कि वे 16 वर्षो से तालाब की देख-रेख और साफ-सफाई कर रहीं हैं वह निरर्थक नहीं है। दोगुने जोश के साथ महिलाओं को मुहिम में जोड़ा और जल सहेलियों का संगठन बनाया। जल सहेलियों ने अगुवाई का जिम्मा उन्हें दिया।

सबने मिलकर तालाब को सुधारने का नियोजन बनाया और उन्नति की मदद से ग्राम पंचायत में प्रस्ताव दिए। तालाब 'अमृत सरोवर योजना' में जीर्णोद्धार के लिए चुना गया और जल सहेली संगठन द्वारा चिन्हित कामों के अनुरुप 24 लाख रुपए के कार्य स्वीकृत हुए। अभी तक आगौर से झाड़ियों की सफाई की गई है, अन्य काम चल रहे हैं। महात्मा गांधी नरेगा कार्य के दौरान श्रमिकों ने पारुदेवी से प्रेरित होकर चंदा किया तथा बाहर बने बोरवेल से तालाब के अन्दर पाइप लाइन डालकर पानी भरा जिससे बरसात आने तक पशु पी सकें।

पारुदेवी तालाब पर निगरानी रखती हैं। वे गांव की बहुओं, बच्चों और रिश्तेदारों को तालाब की उपयोगिता और महत्व समझाने के अवसर तलाशती रहती हैं। नवोणी ग्यारस पर कई सालों बाद पारुदेवी ने तालाब पर श्रमदान की मुहिम चलाई जिसमें 80 लोग जुड़े।

''मेरी ताकत संगठन की महिलाएं हैं। महात्मा गांधी नरेगा योजना चालू होने के इतने साल बाद पहली बार हमने मांगपत्र भरकर दिया और रसीद लेकर काम मांगा।''

प्रेमी देवी

उपयोगी कार्यो में पंचायत की मदद करती हैं, खराब काम का बेझिझक विरोध

प्रेमीदेवी भील बालोतरा जिला के खन्नोड़ा गांव की रहने वाली हैं। वे पिछले छः सालों से गांव के तालाब के रख-रखाव में योगदान दे रही हैं। जब जल सहेली संगठन की बात हुई तो उन्होंने घर-घर घूमकर महिलाओं को जोड़ा। इस काम के लिए वे सभी जातियों के घर गई, जिससे सबकी सहभागिता सुनिश्चित हो सके। जल सहेली समूह में 50 महिलाएं जुड़ीं और उन्होंने प्रेमी देवी को ही अगुवाई के लिए चुना।

जल सहेलियों ने गांव की दो नाडियों के जीर्णोद्धार की योजना बनाई और ग्राम पंचायत में प्रस्ताव दिया। स्वीकृति के बाद आगौर से झाड़ियां काटी गई, पाल की मरम्मत हुई, आगौर को समतल किया गया, पानी की आवक के चैनल बनाए और गाद निकाली गई। प्रेमी देवी बताती हैं कि पहली बार महात्मा गांधी नरेगा में मांगपत्र व रसीद लेकर 55 और फिर 110 महिलाओं ने 60 दिन काम की मांग की। पाल को मजबूत करने के लिए पत्थर लगाने व चैनल निर्माण का काम गुणवत्तायुक्त नहीं हो रहा था तो पंचायत को अवगत कराया और तकनीकी अधिकारी को बुलाकर दिखाया व सुधार कराया। नाडी की प्रबंधन व्यवस्था के लिए ठोस नियम बनाए और गांव की सामुदायिक बैठक में सब की स्वीकृति ली, नियमों की पालना में सहयोग मांगा। वे पूरे विश्वास से कहती हैं कि नियमों को तोड़ने की किसी में हिम्मत नहीं हैं।

प्रेमी देवी ग्राम पंचायत के उपयोगी व अच्छे कार्यो में मदद करती हैं तथा खराब कार्यो का बेझिझक विरोध भी करती हैं। ग्राम पंचायत भी कार्यक्रमों में इन्हें बुलाती है तथा सलाह लेती है। खन्नोड़ा गांव में दोनों नाडियों के अतिरिक्त दो बेरे हैं जिनसे पानी की पूर्ति होती है। गांव में आज भी पनघट लगती है। आर्थिक रुप से कमजोर परिवार की महिलाएं घड़ों से पानी ले जाती हैं। दोनो बेरों से टेंकर व टंकी वाले पानी भरते थे, जिससे घड़ा भरने वाली महिलाओं को परेशानी होती थी। प्रेमीदेवी ने जल सहेली को साथ लेकर गांव की मीटिंग बुलाई तथा एक बेरे को केवल घड़ा भरने के लिए तय करवाया। अब इस बेरे से टेंकर व टंकी वाले पानी नहीं भरते।

"मैं मेरी बात बड़े मंच पर कह देती हूं। मुझे गांव के विकास की बात करने में कोई झिझक नहीं है। अच्छे कार्य करवाने के लिए मेरे परिवार की ओर से कोई रोक-टोक नहीं है। सामूहिक कार्य करने पर कोई दिक्कत नहीं आती है। राजीविका के ग्राम संगठन में कोषाध्यक्ष तथा कलस्टर फैडरेशन में सचिव हूं। समूह में लिखा-पढ़ी का काम भी करती हूं।"

रसाल देवी

कई क्षेत्रों में अगुवाई करती हैं

नागौर जिले के झुंझाला गांव की रसाल देवी आठवीं तक पढी हैं, और घर पर सिलाई का काम करती हैं। पति गांव में किराणा की दुकान चलाते हैं। रसाल देवी ने गांव में महिलाओं का संगठन बनाने के लिए घर-घर जाकर प्रेरित किया। वे कहती हैं, गांव के विकास में भागीदारी से सार्थक कार्य कराने पर ही लाभ मिलेगा। यह बात बार-बार महिलाओं को समझाती, तब जाकर महिलाएं घर का काम छोड़कर बाहर निकलीं। आज ग्राम संगठन में 80 महिलाएं जुड़ी हैं।

गरीब की मदद करना रसाल देवी को अच्छा लगता है। जल स्त्रोत पर काम करने की प्रेरणा उन्हें अपने दादा जी से मिली। वे जल स्त्रोत के विकास को लेकर काम करते थे और बच्चों को पास बिठाकर प्रकृति को बचाने तथा भलाई का काम करने की सलाह देते थे। रसाल देवी जल सहेली समूह की अगुवा हैं। उनके साथ

मिलकर तालाब विकास का नियोजन किया तथा ग्राम पंचायत में जाकर प्रस्ताव दिए। महात्मा गांधी नरेगा के कार्य में वे मेट चुनी गई। उन्होंने देखा कि श्रमिक तालाब पर आकर बैठ जाते हैं। सभी को समझाकर गुणवत्तापूर्ण काम करने के लिए प्रेरित किया।

वर्षा से पहले तालाब पर महिलाओं को इकट्ठा कर श्रमदान का आयोजन किया। काम को चिन्हित कर श्रमदान करवाया। पिछले साल तालाब पर लगे पेड़-पौधे पानी की कमी के कारण जल रहे थे, तो सरपंच से बात कर पानी डलवाया। महिलाओं को साथ लेकर ग्राम सभा में पानी का टांका बनाने, आवास निर्माण, सात परिवारों के शौचालय निर्माण का पैसा नहीं आने का मुद्दा रखा था। यह पहला मौका था, जब ग्राम सभा में महिलाएं गई तथा अपने मुद्दे रखे।

“अपनी बात पंचायत में रखती हूं और बात को सुना भी जाता है। यह मेरे तथा जल सहेली के लिए नई बात है।”

सुन्दर देवी

नियमों की पालना करवाती हैं

नवापुरा घ्वैसा की रहने वाली 50 वर्षीय सुन्दर देवी जल सहेली समूह का नेतृत्व करती हैं। समूह में 30 महिलाएं हैं। सुंदर देवी बताती हैं कि ‘‘सभी सदस्य हर महीने की बैठक में आती हैं तथा जो भी निर्णय लिए जाते हैं, उनको लागू करने में सहयोग करती हैं।’’

वे बताती हैं, ‘‘गांव की मसानिया नाडी व टिपरी नाडी देख-रेख के अभाव में अनुपयोगी हो गई थी। पानी की अन्य व्यवस्था होने के बाद लोगों ने नियमों की पालना भी छोड़ दी। कुछ लोग अपने खेतों में मिट्टी डालने के लिए खोद कर ले गए, जिससे तल कच्चा हो गया तथा पानी नहीं रुकता है। लोग गंदगी करने लगे। यह सब देखकर बुरा तो लगता था, लेकिन इसे रोकने की पहल करने वाला कोई नहीं था। जल सहेली बैठकों में जल स्त्रोतों की उपयोगिता के बारे में चर्चा से समझ आया कि इनको उपयोगी बनाना चाहिए। मैंने ठान लिया कि जल सहेली के सहयोग से नाडियों को फिर से ठीक कराउंगी।’’

जल सहेली व गांव के लोगों के साथ बैठक कर मसानिया नाडी को ठीक कराने के लिए नाडी व आगौर में घूमी, संसाधन नक्शा बना कर कार्यो की पहचान की। प्रस्ताव तैयार कर ग्राम पंचायत को दिया। पंचायत ने रुचि दिखाई तथा कार्य स्वीकृत कराए। कार्य चालू हुआ तब जल सहेली ने लोगों को पूरा काम करने के लिए प्रेरित किया तथा निगरानी कर गुणत्तापूर्ण कार्य कराए।

नाडी पर प्रबंधन नियमों की पालना नहीं होती थी। पहले नियम थे तथा गांव मिलकर पालना कराता था। जल सहेली ने बुजुर्ग महिलाओं से पुराने नियमों की जानकारी लेकर कुछ नए नियम बनाए। नाडी से मिट्टी खोद कर ले जाने, आगौर व भराव क्षेत्र में गंदगी करने से रोक लगाने पर जोर दिया। मिट्टी के लिए आने वाले ट्रेक्टर का रास्ता बंद कराया। समुदाय व पंचायत की बैठक में नियम पढ़कर सुनाए तथा सभी ने नियमों की पालना में सहयोग की सहमति जताई।

जुलाई 2023 के प्रथम पखवाड़े में मसानिया नाडी पर महात्मा गांधी नरेगा का काम करने आई महिलाओं ने देखा कि नाडी में कोई शौच करके चला गया। पता लगाने की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। दूसरे दिन आई, तो फिर वही स्थिति मिली। महिलाएं चप्पलों के निशान को देखते हुए उसके घर तक पहुंच गई। जो व्यक्ति शौच करके गया था, घर पर नहीं था। सरपंच से बात की तो उन्होंने फोन कर उसे पंचायत में बुलाया। चप्पलों के निशान उसी व्यक्ति के थे तथा उसने सब के सामने गलती स्वीकार कर ली। दंड स्वरुप उसी से गंदगी उठवाकर सफाई कराई। 15 अगस्त 2023 को ग्राम सभा में नाडी के नियम पढ़कर सुनाए तथा सभी से पालना का अनुरोध किया।

"मैं बिल्कुल पढ़ी–लिखी नहीं हूं। फिर भी मुझे न्याय पाने के कई रास्ते पता हैं। प्रभावशाली लोग मुझे धमकियां देते हैं, पर मुझसे डरते भी हैं। सभी को पता है मैं गलत नहीं होने दूंगी।"

सुन्दर बाई

आगौर में खनन रुकवाने की लम्बी लड़ाई

बालोतरा जिला के गांव खारड़ी की सुन्दर देवी पिछले कई सालों से अपने गांव की नाडीयों व चारागाह को बचाने का प्रयास कर रही हैं। इन कार्यों में गांव के प्रभावशाली लोग ही आड़े आते हैं। परंतु वे नहीं रुकतीं। कभी उच्च अधिकारियों से शिकायत कर, तो कभी मीडिया की मदद ले, समाधान के मार्ग तलाशती रहती हैं।

वह बताती है कि गांव की नाडी के ऊपर की जमीन पर पत्थर खनन की लीज थी। पत्थर कटाई से उत्पन्न सारा मलबा व गन्दा पानी नाडी में आता था। पानी लाल हो रहा था और पक्षी मर रहे थे। सुन्दर देवी ने जिला कलेक्टर से लिखित शिकायत की और लीज खारिज हुई। स्थानीय ठेकेदार ने पुलिस से दबाव डलवाया। सुन्दर देवी ने बड़े आत्मविश्वास से कहा कि ठेकेदार से नहीं, उनका झगड़ा तो नाडी को गन्दा करने वाले से है।

गांव के चारागाह में गिड़ा नाडा है जिस पर पिछले दस वर्षो से अवैध खनन हो रहा था। गांव वाले बार-बार रोकने की मांग करते थे। थोड़े समय के लिए खनन रुकता और फिर शुरु हो जाता। ठेकेदार इनकी बात को अनसुना करता था। उन्होंने खनन कार्य का विडियो बनाकर तहसील अधिकारी को भेजा, जिन्होंने निर्देश देकर खनन रुकवाया। महात्मा गांधी नरेगा योजना में नाडी पर पक्का कार्य करने के लिए ठेकेदार पाल को तोड़कर पीचिंग का कार्य करा रहा था। सुन्दर देवी के रोकने पर ठेकेदार नहीं माना। इन्होंने फिर विडियो बनाकर न्यूज चैनल को भेज दिया। इसके बाद गांव के ही कुछ प्रभावशाली लोगों से इन्हें धमकियां मिलने लगी तो इन्होनें टोल-फ्री नम्बर 181 पर ठेकेदार की शिकायत की और उच्च अधिकारियों से कार्य का भुगतान रोकने की मांग की।

अच्छे कार्यों में सहयोग और गलत कार्यो का पुरजोर विरोध करने में सुंदर देवी की पहचान पूरे ब्लॉक में है। वह अपने गांव ही नहीं, जहां भी गरीब के साथ अन्याय होता है, उसकी मदद के लिए सक्रिय रहती हैं। जल सहेली के अतिरिक्त राजीविका समूह में 112 महिलाओं को जोड़ा। ग्राम संगठन की अध्यक्ष हैं तथा कई संगठनों को मिलकर बने कलस्टर का नेतृत्व करती हैं। पंचायत प्रत्येक काम में इनकी सलाह व मदद लेती है। किसी कार्यक्रम अथवा विभाग में निडरता से अपनी बात कहती हैं। इनके नेतृत्व की पहचान पूरे ब्लॉक में है।

''स्कूल, गांव व ग्राम पंचायत के कार्यक्रमों में महिला नेताओं को बोलते देखती, तो मेरा नेतृत्व करने को मन करता था, लेकिन अवसर नहीं मिला। जल सहेली का नेतृत्व करने का मंच मिला तथा मुद्दों की समझ बनी। अब इस काम को जारी रखूंगी।''

उर्मिला कुमारी

अवसर व मंच मिलने से नेतृत्व निखरा

जैसलमेर जिले के खुइयाला गांव की उर्मिला कुमारी मुख्य जल स्त्रोत बनिए की नाडी के जीर्णोद्धार एवं प्रबंधन व्यवस्था बनाने में सक्रिय योगदान कर रही है। बीए पूर्ण कर आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए तथा घरेलू कामकाज के अतिरिक्त जल सहेली समूह का नेतृत्व व मार्गदर्शन करती है। वे बताती हैं, ''जल सहेली समूह के साथ जुड़ने के बाद मरुधरा में पारंपरिक जल स्त्रोतों एवं शामलात संसाधनों के महत्व पर समझ बनी। जल सहेली लीडर बैठकों, ऑन लाइन संवाद में जुड़ने से पारंपरिक जल स्त्रोतों को उपयोगी बनाए रखने का तरीका समझ आया।''

उर्मिला बताती हैं कि देखरेख नहीं होने के कारण गांव का मुख्य जलस्त्रोत बनिए की नाडी अनुपयोगी होने लगी थी। पूर्व में जो लोग प्रबंधन देखते थे, उनके घरों में पेयजल की व्यवस्था होने से उन्होंने देखभाल छोड़ दी। लेकिन गरीब परिवार नाडी पर निर्भर हैं। लंबे समय से विकास एवं देखभाल नहीं होने के कारण नाडी की भराव क्षमता घट गई। उन्नति के सहयोग से जल सहेली ने नाडी व आगौर का भ्रमण किया तथा जीर्णोद्धार के लिए क्या काम कराए जाने की जरुरत है, उनकी पहचान हुई। बरसात के समय गांव का गंदा पानी नाडी में आने लगा। आगौर में नई नाडियां बनने एवं चैनल मिट्टी से भर जाने के कारण आवक भी कम हो गई। सभी कामों के प्रस्ताव तैयार किए। जल सहेली ने पंचायत में प्रस्ताव देकर विकास नियोजन में शामिल करने की मांग की। उर्मिला बताती हैं ''ग्राम सभा में महिलाएं नहीं जाती थी। कलस्टर बैठक व ऑनलाइन संवाद में ग्रामसभा में महिलाओं की भागीदारी पर चर्चा सुनकर मैंने महिलाओं को तैयार किया तथा पहला अवसर था, जब ग्राम सभा में महिलाओं ने मुद्दे रखे।''

मानसून सीजन तक काम चालू नहीं हुआ। पिछले साल बरसात सामान्य से अधिक हुई तथा नाडी भरने के बाद पानी कब्रिस्तान में जाने लगा। मुस्लिम समुदाय के मुखियाओं ने पाल तोड़ दी। जिससे नाडी खाली हो गई। दोनों समुदाय एक दूसरे पर दोषारोपण करने लगे। ऐसा पहले भी कई बार हुआ था और समुदायों के बीच मन-मुटाव का बड़ा कारण था। गांव का गंदा पानी खड़ीन में निकालने के लिए बनाया गया चैनल भी टूट गया तथा गंदा पानी नाडी में आ गया। बरसात बंद होने के दूसरे दिन जल सहेली की बैठक बुलाई। पाल तोड़ने तथा गंदा पानी नाडी में आने के कारण जल सहेली काफी गुस्से में थी।

उर्मिला के कहने पर ग्राम पंचायत में आमसभा बुलाई जिसमें सभी समुदायों को सूचना कर बुलाया गया। सबने मिलकर नाडी को देखा और चर्चा की तो समझ आया कि नेस्टा ऊंचा होने के कारण यह मुश्किल है। नेस्टा के लेवल को नीचा करने, नाडी से मिट्टी निकालने व गंदा पानी निकालने वाले चैनल को ठीक कराने का निर्णय हुआ। यह तीनों काम जल सहेली की देखरेख में पूरे हुए। इसी दिन प्रबंधन व्यवस्था के नियम तय किए गए। उर्मिला बताती हैं ''गांव व पंचायत में जल सहेली की पहचान बनी है। जल सहेली के निर्णयों को माना जाने लगा है। मैं पढ़ी-लिखी हूं तथा प्रस्ताव एवं प्रार्थना पत्र आदि लिखना सीख लिया।''